मुण्डारी-व्याकरण

रामदयाल मुण्डा

मुण्डारी-व्याकरण

डॉ. रामदयाल मुण्डा

प्रकाशक

रूमबुल

दिरि ओड़ाः, सरनाटोली-हतमा, राँची कॉलेज के पीछे
राँची-834008, झारखण्ड

मुण्डारी-व्याकरण

प्रकाशक : रुम्बुल
दिरि ओड़ाः, सरनाटोली–हतमा, राँची कॉलेज के पीछे,
राँची–834008, झारखण्ड
फोन : 07739817358
ई–मेल : rdm.rumbul@gmail.com

प्रथम संस्करण : 1978

तृतीय संस्करण : 2013

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, कोकर, राँची–834001
मो. 094311 82812

मूल्य : 70/– रूपये

अनुक्रम

		पृष्ठ
	भूमिका	1
1.	वर्ण खण्ड :	5
	स्वर	
	व्यंजन	
	अर्द्धव्यंजन	
	कुछ शब्द प्रयोग	
2.	संधि खण्ड :	9
	स्वर संधि :	
	दीर्घ संधि	
	साम्य संधि	
	व्यंजन संधि	
	द परिवर्त्तन	
	: परिवर्त्तन	
3.	संज्ञा खण्ड :	10
	वर्गीकरण :	
	जातिवाचक	
	व्यक्तिवाचक	
	भाववाचक	
	समूहवाचक	
	वचन	
4.	सर्वनाम खण्ड :	14
	वर्गीकरण :	
	पुरुषवाचक	
	संकेतवाचक	
	प्रश्नवाचक	
	निश्चयवाचक	
5.	विशेषण खण्ड :	18
	वर्गीकरण :	
	गुणवाचक	

(ट) क्रिया+तान ताइकेन

भविष्यत काल : 32
विधि/निषेध 33
वाच्य : 35
सामान्य कर्तृबोधक
विशिष्ट कर्तृबोधक
कर्म बोधक
परस्परता बोधक
कर्तृ कर्म बोधक
परार्थ बोधक
मेलक तत्त्व : 38
कर्त्ता मेलक तत्त्व
कर्म मेलक तत्त्व
विशिष्ट क्रियाएँ : 39
मेना:
तान
संबोधी क्रियाएँ : 41
मार
एला
दोला
तेर
आते
इति:
जू
दे
ने
ओचो/दिर
आउरि
आलो
आउ
दुकुञ
संयुक्त क्रिया :
स्वतंत्र संयुक्त क्रिया

संख्यावाचक
गणनावाचक
वितरण वाचक
आवृतिवाचक
समुदाय वाचक
अवस्थाएँ :
सामान्य अवस्था
हीन अवस्था
उत्तम अवस्था
6. क्रिया विशेषण खण्ड : 22
वर्गीकरण :
स्थानवाचक
कालवाचक
परिमाण वाचक
रीति वाचक
7. क्रिया खण्ड : 24
वर्गीकरण :
व्याकरणगत तत्व :
कालः 26
वर्त्तमानकाल :
(क) क्रिया+तान
(ख) क्रिया+जाद
भूतकाल : 28
(क) क्रिया+लेद
(ख) क्रिया+लेन
(ग) क्रिया+केद
(घ) क्रिया+केन
(ङ) क्रिया+जान
(च) क्रिया+ताद/आकाद
(छ) क्रिया+आकान
(ज) क्रिया+आन
(झ) क्रिया+ताद/आकाद ताइकेन
(ञ) क्रिया+जाद ताइकेन

दो
बाआरि
राटि/जाकेद
ओ
बादकाम/बातिकाम/बातिः
एनं
दाङ/दाराङ
चा
ड़ोः

9. समास खण्ड : 55

तत्पुरूष समास :

कर्म तत्पुरूष
करण तत्पुरूष
सम्प्रदान तत्पुरूष
आपादान तत्पुरूष
संबंध तत्पुरूष
अधिकरण तत्पुरूष

कर्मधारय समास :

द्वन्द्व
द्विगु
बहुब्रीहि

10. संयोजन खण्ड : 58

ओड़ोः/ओडोः/हाडोः/आर/हार
चा
चि
कारेदो
नागे ..... नागे

11. संबोधन खण्ड 60

ए/हे/ओ
आ/या
ना/गो/गे
रे
हो/हाले
गाले

विशिष्ट संयुक्त क्रिया
संबद्ध क्रिया
प्रेरणार्थक क्रिया : 46
अ + क्रिया
क्रिया + इरि/इचि
क्रिया + रिका
पूर्वकालिक क्रिया
8. प्रत्यय खण्ड : 47
कारक प्रत्यय :
स्वतन्त्र प्रत्यय :
ते
रे
जाकेद
आः
लोः
साम
ताः
बेगार
साः/पाड़ा
नागेन
मेनते
आते
संयुक्त प्रत्यय :
लोः ते
लोः रे
ताः ते
ताः आते (तागाते)
ताः रे
साः ते
साः आते (सागाते)
साः रे
वलाधानक प्रत्यय :
गे

12. वाक्य खण्ड : 64

वर्गीकरण :

सत्ताबोधक

प्रश्नबोधक

नकार बोधक

संदेह बोधक

अन्यमनस्कता बोधक

निश्चय बोधक

वाक्य संयोजन :

ओड़ो:

च

चि (या, प्रश्नवाचक)

चि (कि)

चि (कर)

कारेदो

नागे....नागे

रेदो

मेनदो

इमिन रेओ

ओको.... एन

काल प्रत्यय द्वारा

चिलका.... एनका

मेनते

चिआ: चि

कारक प्रत्ययों द्वारा

वाक्योत्तर :

हे

का

इदु

काचि

सारते

इआ

13. काव्यभाषा खण्ड : 72

भूमिका

मुण्डारी आग्नेय (Austric) भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण भाषा है जिसके बोलने वालों की अनुमानित संख्या सारे भारत (बिहार, बंगाल, आसाम, उड़ीसा, मध्यप्रदेश) में आठ लाख के करीब होगी। संताली, हो, खड़िया, जुआं, सवर, गूतोब (गदव), गोरुम (परें), रेमो (बोन्दो), गेतः (डिडइ), निकोबारी और खासी भाषाएं मिलकर ये आग्नेय भाषाओं की पश्चिमी (आस्ट्रोएशियाटिक) शाखा का निर्माण करती है। आर्य-द्रविड़ पूर्व किसी समय यह भाषा परिवार सारे भारत की भाषा रही होगी और सिंधु घाटी तथा उसके पहले की सभ्यताओं के निर्माण में इन्हीं भाषा-भाषी लोगों का हाथ रहा होगा। आर्य-द्रविड़ों के आगमन के पश्चात भी भारतीय संस्कृति के वर्तमान समन्वित रूप के निर्माण में इन लोगों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है (देखिए रामदयाल मुण्डा 'संस्कृत साहित्य के आदिवासी और भारतीय संस्कृति की उनकी देन' वन्यजाति, अंक 20, संख्या 3, जुलाई 1972)। दुर्भाग्य से इनके वंशज अब केवल दया के पात्र 'आदिवासी' ही रह गए हैं और इनकी संस्कृति अधिकांशतः एक पुरानी चीज मानी जाकर सिर्फ म्यूजियम में रखी जाने योग्य समझी जाती रही है।

इधर कई वर्षों से क्षेत्रीय भाषाओं के साथ इन भाषाओं का भी महत्व बढ़ा है। सरकारी कामों और स्कूल कॉलेजों में इन्हें प्रश्रय दिया जा रहा है। इसलिए मुण्डारी जैसी, अन्यथा उपेक्षित, भाषाओं को पनपने का मौका मिल रहा है। नया साहित्य लिखा जा रहा है और पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा आकाशवाणी द्वारा इसे प्रचारित किया जा रहा है। यह सब इस भाषा के विकास के शुभ लक्षण हैं।

नए साहित्य के विकास की समस्याएं मुण्डारी के साथ भी लगी हैं। इस समय की सबसे बड़ी समस्या भाषा में मानवीकरण की है। इसे लिखने के पुराने आग्रह चले आ रहे हैं और नई सूझ-बूझ भी प्रस्तावित की जा रही है। दोनों के रेल-पेल में ही जो कुछ लिखाजा रहा है लिखा जा रहा है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत पुस्तक को लिखने का मूल उद्देश्य मुण्डारी भाषा लेखन को एक वैज्ञानिक आधार देना ही है। इस दृष्टि से हिन्दी में मुण्डारी पर यह पहली पुस्तक है। सौभाग्य से देवनागरी संसार की सबसे वैज्ञानिक लिपि भी है किन्तु दुर्भाग्य भी है कि हिन्दी में यह किंचित 'दूषित' भी हो गई है। नतीजा यह हुआ कि हिन्दी वालों को खुश रखने के लिए जो मुण्डारी लिखी जाती है वह पूणतः वैज्ञानिक होने से रह जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन हमने देवनागरी के 'पुराने' मानदण्डों (संस्कृत) के अनुसार, बहुत ही कम परिवर्तन के साथ, किया है। इसलिए हिन्दी-अभ्यस्त पाठकों से हमारा आग्रह है कि वे यहाँ प्रस्तुत मुण्डारी को हिन्दी की तरह न पढ़कर संस्कृत की तरह (शब्दान्त। पदान्त व्यंजनों को आ सहित) पढ़ें। जैसे, दुबाकानाको, 'वे बैठे (हुए) हैं' में बा और ना को आ के साथ उच्चरित किया जाए। इस वाक्य को दुबाकाना को लिखना हमारे विचार से सही होगा क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त बा, का, और ना में उच्चरित स्वर (आ) का दीर्घत्व एक है।

कुछ अवैज्ञानिकता अंग्रेजी की नकल पर भी समा गई है। उदाहरण के लिए होफमन साहब, जो इस भाषा के सबसे बड़े आचार्य हो गए हैं, द्वारा ङ और ञ के लिए ng का लिखना लिया जा सकता है। उन्होंने आञ 'मैं' को aing लिखना शुरु किया तो उनके हिन्दी अनुयायी आञ को आइंग लिखने लगे। स्वाभाविक है कि प्रत्यय आदि इसी में जोड़े जाने लगे और कालक्रम में आञा: जैसे छोटे रूप आञ आञागा: में परिवर्तित हो गए। ऐसी ही और बातें हैं जिनकी चर्चा प्रस्तुत पुस्तक में यथा स्थान मिलेगी।

मुण्डारी के रूप-रचनागत मामलों में भी अब तक के अध्ययन हिन्दी और अंग्रेजी के पूर्वाग्रहों से ग्रस्त रहे हैं। मुण्डारी और इस परिवार की संताली प्रभृत अन्य भाषाओं की प्रकृति, बहुत सारी समानताओं के बावजूद, आर्यभाषाओं से भिन्न है। हमने इन भिन्नताओं को यथाशक्ति समझने की कोशिश की है। हमारा विनम्र विचार है कि इस दौरान हमने मुण्डा (या निषाद) परिवार की भाषाओं की अध्ययन प्रणाली की कुछ नई संभावनाएं दी है।

इस पुस्तक के साथ मुण्डारी की बोलियों के लिए हम नए नाम प्रस्तावित कर रहे हैं : हासादा: मुण्डारी के लिए ताला (मध्य) मुण्डारी, नागुरि मुण्डारी के लिए चेतान, (ऊपरी=पश्चिमी) मुण्डारी, और तामाड़िया मुण्डारी के लिए लातार (निचली = पूरबी) मुण्डारी। हमारा प्रस्ताव है कि केरा: (राँची शहर के आसपास बोली जैने वाली) मुण्डारी को चेतना मुण्डारी का ही विस्तार माना जाए। प्रस्तुत पुस्तक में हमने ताला (मध्य) मुण्डारी को ही मानक मानकर उसी को व्याख्या की है। वैसे अन्य बोलियों की विशिष्टताओं का भी विवेचन हमने टिप्पणी के रूप में यथास्थान सम्मिलित किया है।

अपने छिटपुट (अधिकांशत: लेखों में व्यक्त) विचारों का यह संयोजित रूप

शायद ही अस्तित्व में आता अगर अपने सहयोगियों और हितैषियों का प्रोत्साहन न मिलता। मैं विशेषकर सम्मान्य पीटर पोनेत साहब, जिन्हें होफमन साहब के अधूरे काम को पूरा करने का श्रेय है, आभारी हूँ, जिनके प्रबल आग्रह से ही यह पुस्तक इतनी जल्दी प्रकाश में आ रही है। संयोग से यह वर्ष मुण्डारी भाषा और संस्कृति के अनन्य अध्येता होफमन साहब की जन्मशती का वर्ष भी है। यह रचना उनकी स्मृति को समर्पित हमारा अर्घ्य भी है। बहनें रानी, अमिता और नलिनी का सहयोग सदा की तरह इस पुस्तक के प्रणयन में भी है। उन्हें भी धन्यवाद। विस्तार भय और तात्कालिक आवश्यकता के दबाव से हम पुस्तक का संक्षिप्त रूप ही निकाल रहे हैं। जो है उसमें भी बहुत सी भूलें रह गई होगी। विद्वान सुधार कर काम चलाएं और हमारा मार्ग दर्शन करें।

विनीत

मिनेसोटा विश्वविद्यालय **रामदयाल मुण्डा**

1. वर्ण खण्ड
मुण्डारी वर्णमाला

स्वर : अ आ (ा) इ (ि) ई (ी) उ (ु) ऊ (ू) ए (े) ऐ (ै) ओ (ो) औ (ौ)
अनुस्वार : अं (ं)
द्रष्टव्य :

(1) सामान्यतया शब्दमध्य और शब्दान्त में अक्षर के साथ आने पर (कोष्ठक में इंगित) मात्रा रूप ही प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण, आबा 'पिता', इलि (= इ+ल+इ), 'हंड़िया', उतु (= उ+त+उ), 'तरकारी', हेड़े (= ह+ए+ड़+ए) 'भूसा', होरो (= ह+ओ+र+ओ) 'कछुआ'।

(2) हिन्दी आदि आर्यभाषाओं से पृथक मुण्डारी में ह्रस्व ए और दीर्घ ए (ऐ) तथा ह्रस्व ओ और दीर्घ ओ (औ) भी होते हैं। छपाई की सुविधा के लिए दीर्घ ए और दीर्घ ओ के लिए हम यहाँ ए और ओ का द्वित्व प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण, बोर 'सूत निकालना', बोओर 'वर'; लेल 'देखना', लेएल 'अच्छी तरह देखना'। दूसरे उदाहरण, सेएल 'ओखल', लोओर 'घाटी'।

(3) अनुस्वार (ं) का प्रयोग विकल्प रूप से संयुक्त अनुनासिक व्यंजन वर्ण को लिखने में होता है। उदाहरण, आङका = आंका 'आंगन'; गोलानचि = गोलांचि 'गुलाइंची का फूल'; कानटाड़ा = कांटाड़ा 'कटहल'; कानता = कांता 'लेदरा, कांथा'; जामबुडु = जांबुडु 'धामन साँप'।

व्यंजन :

अघोष		घोष		घोष	
अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अनुनासिक	
क	(ख)	ग	(घ)	ङ	कण्ठय
च	(छ)	ज	(झ)	ञ	तालव्य
ट	(ठ)	ड	(ढ)	ण	मूर्धन्य
त	(थ)	द	(ध)	न	दन्त्य
प	(फ)	ब	(भ)	म	ओष्ठ्य

अर्द्ध व्यंजन :

य र ल व स ह : ड़

द्रष्टव्य :

(1) यहाँ सभी व्यंजन उच्चारण की सुविधा के लिए अक्षरान्त आ सहित दिए गए हैं। मूल रूप में व्यंजन हलन्त्य होते हैं। जैसे, का = क+अ, हा = ह+अ।

(2) कोष्ठक के अन्दर के अक्षर (खा, घा इत्यादि) मुण्डारी में बिरले ही प्रयुक्त होते हैं। इनका प्रयोग सामान्यतया आर्य भाषाओं से आगत शब्दों को लिखने में होता है। उदाहरण, धोरोम 'धर्म', फांसे 'फांसी', भारोम 'भार' इत्यादि। असामान्यरूप से जोर देने के लिए (जैसे क्रोध में) मूल मुण्डारी शब्दों के साथ भी महाप्राणत्व का प्रयोग होता है। जैसे, सेता → सेथा 'कुत्ता', फादा → 'लात', ताम → थाम 'लाठी से मारना'। स्वरों से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में इस प्रकार के प्रयोग में ह का आगम होता है। इदो → हिदो 'पता नहीं'; ओमिपे → होमिपे 'उसे मारो', इत्यादि।

(3) यहाँ हम संस्कृत :(विसर्ग) का प्रयोग मुण्डारी काकल्य ध्वनि (?) को लिखने में करते हैं। उदाहरण, मा: 'काटना', रे: 'लूटना', ला: 'छिलना'; दा: 'पानी', गुरि: 'गोबर' इत्यादि।

(4) शब्दान्त में सिर्फ द, ब, ङ, ञ, न, म, र, ल और : ही आते हैं। ङ, ञ, ण, ड़, : का प्रयोग शब्दारम्भ में नहीं होता। या, वा का प्रयोग शब्द मध्य में ही होता है। जैसे, बायार 'रस्सी', तायार 'खीरा', नावा 'नया', इत्यादि।

(5) र के रूप : हिन्दी-संस्कृत की ही तरह व्यंजन के पहले आने पर उस व्यंजन के ऊपर ̍ (रेफ) और व्यंजन के बाद आने पर उसके नीचे (गोल पेंदी वाले अक्षरों में) ^ से दिखाए जाते हैं। पिछले दो रूपों का प्रयोग मुण्डारी में बिरले ही होता है – सामान्यतया आर्य भाषाओं से आगत शब्दों में। जैसे, प्रेम् 'प्रेम' इत्यादि।

(6) मुण्डारी शब्द -रचना स्वर-साम्य सिद्धान्त के अनुसार होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक शब्द-सीमा में भिन्न ऊँचाई के स्वर नहीं होंगे। इ/ ई, उ/ ऊ, ऊच्च स्वर कहे गए हैं और ए/ऐ, ओ/औ, मध्यस्वर । अ निम्न स्वर कहा गया है और इस नियम में तटस्थ माना गया है। इस तरह एक शब्द-सीमा में सामान्यतया इ ए या उ ओ का संयोग नहीं होगा। उदाहरण, किचिरि 'कपड़ा', ओते 'धरती', कुपुल 'अतिथि', सालांगि 'ऊँचा', कातु 'बैंठी' इत्यादि।

(7) मुण्डारी शब्द रचना में ह्रस्वत्व की ही प्रधानता होती है। दीर्घत्व का प्रयोग बहुत ही कम शब्दों में देखा जाता है। जैसे, आआब 'आँख-कान धोना', ईल 'पंख', ऊब 'बाल' इत्यादि।

कुछ शब्द प्रयोग :

	शब्दारंभ	शब्दमध्य	शब्दान्त
अ	आपिर 'उड़ना'	गोआरि 'प्रार्थना'	मानोआ 'मानव'
आआ	आआब 'मुंह–कान धोना'	साआन 'लकड़ी'	बा 'फूल'
इ	इपिल 'तारा'	पुइला 'पैला'	नाणि 'लता'
ई	ईल 'पंख'	जीर 'दलदल'	ती 'हाथ'
उ	उलि 'आम'	चाउलि 'चावल'	पाराउ 'नाम विशेष'
ऊ	ऊब 'बाल'	जू 'जाओ'	सू 'कांटा निकालना'
ए	एन 'मीसना'	पाएला 'आँचल'	बालाए 'कष्ट'
एए	एएको 'लाह'	सेएल 'ओखल'	केए 'हां'
ओ	ओल 'लिखना'	जोला 'चढ़ान'	जाओ 'पुरातन'
ओओ	ओओद 'रगड़ना'(शरीर)	लोओर 'घाटी'	दोओ 'रखना'
अं	आंका 'आंगन'	जां 'हड्डी, बीज'	एआं 'माता'
क	काउः 'कौआ'	टुंकि 'टोकरी'	—
ख	खींस 'क्रोध'	—	—
ग	गाड़ि 'बन्दर'	सांगोम 'समेटना'	—
घ	घाड़ि 'घड़ी'	—	—
ङ	—	आङोः 'सुबह होना'	जाङ 'बीज, हड्डी'
च	चाटु 'हांड़ी'	हिरचि 'छिड़कना'	—
छ	छाड़िं 'खींचना'	—	—
ज	जारगि 'वर्षा'	काजि 'बात'	—
झ	झाएं 'मुर्छा'	साझा 'साझा'	—
ञ	—	काञ्चि (कांचि) 'खांची'	—
ट	टाटि 'दीया'	केटेः 'कड़ा'	—
ठ	ठुल 'बन्दूक दागना'	—	—
ड	डाड़ि 'डाड़ी कुआं'	चुण्डुल 'इंगित करना'	—
ढ	—	—	—
ण	—	नाणि 'लता'	—
त	तानि 'भेड़िया'	आताङ (आतां) 'लोकना'	—

थ	थाड़ि 'थाली'	—	—
द	दारु	गादि 'गूंगा'	लाद 'रोटी'
ध	धारना 'धारन'	—	—
न	नेद 'रंगना'	मानाल 'सेम'	सांगेन (साङ्गेन) 'पल्लव'
प	पारकोम 'खटिया'	चापु 'छूना'	—
फ	फांसे 'फाँसना'	साफा 'साफ'	—
ब	बायार 'रस्सी'	सोबोः 'कुचलना'	साब 'पकड़ना'
भ	भालु 'भालू'	साभा 'सभा'	—
म	माद 'बांस'	हामबाल 'भारी'	साराम 'हरिण'
य	—	नायाल 'हल'	—
र	राचा 'आंगन'	तोरोएः 'राख'	जिर 'झलना'
ल	लाचो 'अधर'	सालांगि 'ऊँचा'	राबाल 'हल्का'
व	—	नावा 'नया'	—
स	सादोम 'घोड़ा'	मासाकाल 'प्रकाश'	—
ह	होरा 'रास्ता'	—	—
:	—	—	दाः 'पानी'
ड़	—	हिड़ि 'ठगना'	—

कुछ समस्या मूलक वाक्यांश वाक्य :

दानाङाकान दिसुम 'छिपा हुआ देश।'
सानाङिञ 'मैं चाहूँगा।'
रांचि रेबु आडेना 'हम राँची में रात बिताएंगे।'
तिसिङेञ हिजुगा 'मैं आज आऊँगा।'
पाड़ाओ काञ बागेएआ 'पढ़ना नहीं छोड़ूँगा।'
आरकिञ बागेएआ 'अर्खि पीना छोड़ूँगा।'
आञो इदि जाञपे 'मुझे भी साथ ले चलो।'
तुञिआञ 'मैं उसे तीर से मारूँगा।'
मोरोःएः दाः 'खट्टा पानी।'
माःकान दारू 'कटा हुआ पेड़।'

2. संधि खण्ड

शब्दों के मिलने की क्रिया को संधि कहते हैं। इस मिलने में कुछ परिवर्तन होते हैं जिनपर हम मुण्डारी के संदर्भ में बातें करेंगे।

स्वर संधि–

(1) दीर्घ संधि : दो ह्रस्व स्वर मिलकर दीर्घ होते हैं।

उदारहण,

साला + आकान = सालाकान 'चुना हुआ' (अ+अ=आ)

इदि + इचि = इदीचि 'ले जाने देना' (इ+इ=ई)

चापु + उरूम = चापूरूम 'छू कर पहचानना' (उ+उ=ऊ)

टोटे + एतेल = टोटेतेल 'तीर संधान करना' (ए+ए=एँ)

मोटो + ओ: = मोटोओ: 'मोटा होना' (ओ+ओ=ओं)

अपवाद : प्रत्ययों के बाद अन्य पुरूष ए: आने पर दीर्घ संधि नहीं होती। एक ए: का लोप होता है।

रांचिते+ए: सेनो: ताना = रांचिते: सेनो: ताना 'वह राँची जा रहा है।'

(2) साम्य संधि : इस संधि के अनुसार इ+ए मिलकर ई और उ+ओ मिलकर ऊ होता है।

उदाहरण,

चापि + एमे = चापीमे 'धोओ' (इ+ए = ई)

हेबे + इमे = हेबीमे 'गोद में लो' (ए+इ = ई)

आतु + ओ: ताना = आतू:ताना 'बह रहा है' (उ+ओ = ऊ)

रानु + ओ = रानू 'दवा भी' (उ+ओ = ऊ)

अन्य स्वरों के बीच संधि नहीं होती।

उदाहरण,

इदि + अ + इमे = इदिआइमे 'उसे कोई चीज पहुँचा दो।'

लोलो + ए + मे = लोलोएमे 'उस चीज को गर्म करो।'

उकु + इ + मे = उकुइमे 'उसे छिपाओ।'

साला + ए + रेओ = सालाएरेओ 'चुनने पर भी।'

व्यंजन संधि

(1) द परिवर्त्तन : च, ट, त, ल, स के पहले द का विकल्प से च, ट, त, ल, स होता है।

उदाहरण,

मादृ + चातोम = माचचातोम या मादचातोम 'बाँस का छाता।'

मिद + टाका = मिटटका या मिदटाका 'एक रूपया'

बिद + तापे = बिततापे या बिदतापे 'कोई चीज गाड़ दो'

उद + लेरे = उललेरे या उदलेरे 'निगलने पर'

माद + साकाम = माससाकाम या मादसाकाम 'बांस की पत्ती'

(2) : काकल्य परिवर्त्तन : किसी स्वर के पहले : का विकल्प क्रमशः ग होता है।

उदाहरण,

माः + आकान = मागाकान या माःआकान 'कटा हुआ'

हिरिः + आकोम = हिरिगाकोम या हिरिःआकोम 'उनके लिए गिरा दो'

सुतुः + आगु = सुनुगागु या सुतुःआगु 'पीछा करना'

पेरेः + एआबु = पेरेगेआबु या पेरेःआबु 'हम उस चीज को भरेंगे'।

उदुबोः + आ = उदुबोगा या उदुबोःआ 'बताया जाएगा'।

(3) : (काकल्य) लोप संधि : : के बाद : सहित किसी स्वर के आने पर एकः का विकल्प से लोप होता है।

उदाहरण,

आएः + आः = आएआः या आएआगाः 'उसका'

रांचिरेनिः + आः = रांचीरेनिआः या रांचि रेनिगाः 'राँची वाले का'

3. संज्ञा खण्ड

वस्तुओं और विचारों की पहचान को संज्ञा कहते हैं। हिन्दी (और अन्य आर्यभाषाओं) की ही तरह मुण्डारी में भी चार प्रकार के संज्ञा शब्द गिनाए जा सकते हैं :

1. जातिवाचक : सादोम 'घोड़ा', ओड़ाः 'घर', किताब 'किताब' इत्यादि।
2. व्यक्तिवाचक : गांगु, रांचि, हिमालय, इत्यादि।
3. समूहवाचक : दाः 'पानी', गितिल 'बालू' राताङ 'बर्फ' इत्यादि।
4. भाववाचक : बानाइ 'बनावट', ओनोल 'लिखावट', गोनोएः 'मरण' इत्यादि।

द्रष्टव्यः

हिन्दी से पृथक मुण्डारी में व्याकरणगत लिंग भेद नहीं होता। उदाहरण के लिए,

हिन्दी में जिस तरह हम आकारान्त पुलिंग शब्दों के बाद ई, (लड़का → लड़की) इत्यादि जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाते हैं तथा जिस तरह लिंग के साथ ही क्रिया रूप भी बदलते हैं, (लड़का जाता है → लड़की जाती है) उस तरह के व्याकरणगत रूप रचनात्मक परिवर्तन मुण्डारी में नहीं होते। मुण्डारी में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों के लिए एक ही क्रिया-रूप लागू होता है।

उदाहरण,

एंगाञे: हिजु:ताना 'मेरी माँ आ रही है।'

हागाञे: हिजु:ताना 'मेरा भाई आ रहा है।'

केवल पारिवारिक संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द हैं जिनमें नैसर्गिक लिंग भेद देखने को मिलता है।

उदाहरण,

पुलिंग शब्द	**स्त्रीलिंग शब्द**
आपु 'पिता'	एंगा 'माता'
हेरेल 'पति'	एरा 'पत्नी'
आरा 'दामाद'	मिसि 'बहन'
बाउ 'बड़ाभाई'	हिलि 'भाभी'
होंजार 'स्वसुर'	हानार 'सास'
साड़ागि 'साढ़ू'	हातोम 'फूफू, मामी'
आबा 'पिता'	गाड़ि 'चाची'
कुमा 'मामा'	नाता 'सौत'

उभयलिंग शब्द :

बोको	'छोटा भाई / छोटी बहन'
उण्डि	....
तेंजा	'साला / साली'
होन	'बच्चा / बच्ची'
सुमदि	'समधी / समधिन'
इरूल	'देवर / देवरानी'
गुइराम	'गोई / बहनोई'

उभयलिंगि शब्दों में लिंग निर्णय कोड़ा 'पुरूष', कुड़ि 'स्त्री' के प्रत्ययात्मक प्रयोग द्वारा होता है।

उदाहरण,

बोकोञ कोड़ा	'मेरा छोटा भाई'
बोकोञ कुड़ि	'मेरी छोटी बहन'
होनते कोड़ा	'उसका बच्चा/बेटा'
होनते कुड़ि	'उनकी बच्ची/बेटी' इत्यादि।

इसी सूची में आर्यभाषाओं से आगत कुछ शब्द हैं जिनका प्रयोग मुण्डारी में भी होता है।

उदाहरण,

आजा	'दादा'	आजी	'दादी'
दादा	'बड़ा भाई'	दाइ	'बड़ी बहन'
काका	'चाचा'	काकि	'चाची'
मामु	'मामा'	मामि	'मामी'

शाब्दिक स्तर पर कुछ और जीववाचक शब्द हैं जिनमें मुण्डारी में नैसर्गिक लिंग भेद दिखाई देता है।

उदाहरण,

हाड़ा	'बैल'	गुण्डि	'गाय'
केड़ा	'भैंसा'	नाउकि	'भैंस'
बाकारा	'बकरा'	पाटिआ	'बकरी'
आण्डिआ	'सांढ़'	कालुटि	'मुर्गी'

दूसरे प्राणीवाचक शब्दों में लिंग निर्णय साण्डि 'नर' और एंगा 'मादा' शब्दों के उपसर्गिक प्रयोग द्वारा किया जाता है।

उदाहरण,

साण्डि कुला	'शेर'	एंगा कुला	'शेरनी'
साण्डि सेता	'कुत्ता'	एंगा सेता	'कुतिया'
साण्डि पुसि	'बिल्ला'	एंगा पुसि	'बिल्ली'
साण्डि सिम	'मुर्गा'	एंगा सिम	'मुर्गी'

जीवत्व:

संज्ञा शब्दों के संदर्भ में हिन्दी के लिंग भेद की ही तरह मुण्डारी में एक महत्वपूर्ण भेद संज्ञा शब्दों की सजीवता या निर्जीविता के आधार पर माना जाता है। सजीवता और निर्जीविता का यह भेद सामान्यतया प्राकृतिक है। आम तौर पर, जो

चलता है उसे सजीव माना गया है। इस वजह से पेड़, पहाड़, मकान इत्यादि निर्जीव माने जाएंगे और सारे जीवधारी सजीव। सम्भवत: इसी 'चलने' के गुण के कारण सूरज, चाँद और तारे सजीव की कोटि में आते हैं।

इस भेद के कारण संज्ञा के कर्त्ता और क्रिया रूपों में भेद होता है।

उदाहरण,

दा: हिजु: ताना — 'पानी आ रहा है।'

{ होड़ोए: हिजुताना — 'आदमी आ रहा है।'
होड़ो हिजु: तानाए: }

चिकाना: ताना — 'क्या (निर्जीव) है?'

चिकानि: तानि: — 'क्या (सजीव) है?'

सामान्यतया सजीव संज्ञा शब्द और उनके लिए प्रयुक्त सर्वमान शब्द क्रिया रूपों में सवचन प्रयुक्त होते हैं। निर्जीव संज्ञा शब्दों के लिए क्रिया रूपों में यह वचन भेद नहीं होता। सर्वनाम और क्रिया प्रकरणों में हम फिर इसकी चर्चा करेंगे।

वचन :

वचन से संज्ञा शब्दों का संख्या बोध होता है। संस्कृत की तरह मुण्डारी में तीन वचन होते हैं :

एकवचन : एक संख्याबोधक

द्विवचन : दो संख्याबोधक

बहुवचन : दो से अधिक संख्याबोधक

एक वचनत्व शब्द में प्रत्ययहीनता द्वारा, द्विवचनत्व शब्द में किङ/किन प्रत्यय द्वारा और बहुवचनत्व शब्द में को प्रत्यय द्वारा प्रकट किया जाता है।

उदाहरण,

चेणे — 'एक चिड़ियाँ'

चेणे किङ — 'दो चिड़ियाँ'

चेणेको — 'दो से अधिक चिड़ियाँ'

द्रष्टव्य :

1. सम्मानार्थ में एक वचन के लिए भी द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे, किसी सम्मान्य व्यक्ति को बैठने के लिए आसन देते समय दुबबेन ''आप दोनों बैंठें (= आप तशरीफ रखें) का प्रयोग। किन्तु दो व्यक्तियों के सम्मानार्थ में भी द्विवचन का ही प्रयोग होता है।

2. बहुवचन संकेतक को का प्रयोग सीमित अर्थ में इत्यादि के लिए होता है।
उदाहरण,

बोओः को हासुजाःञा 'मुझे सिर इत्यादि में दर्द महसूस हो रहा है।'
काटा को लागाञा 'मुझे पैर इत्यादि में थकावट लगती है।'

3. मानवीय व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों तथा संबंधसूचक जातिवाचक संज्ञा शब्दों के साथ ताको का प्रयोग 'का' और दूसरा/ 'दूसरे आदमी' का आशय प्रकट करने के लिए किया जाता है।

उदाहरण,

नागु ताकिङ हिजुःताना 'नागु और एक दूसरा आदमी आ रहे हैं।'
काकाञ कामिताना 'मेरे चाचा और दूसरे लोग काम कर रहे हैं।'

4. सर्वनाम खण्ड

संज्ञा शब्दों के बादले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। मुण्डारी के सर्वनामों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

पुरूषवाचक : आञ 'मैं', आम 'तुम', आएः 'वह' इत्यादि।
संकेतवाचक : एन (काजि) 'वह (बात)', ने होड़ो 'यह आदमी' इत्यादि।
निश्चयवाचक : निमिन होड़ोको 'इतने लोग',आमिन सांगिन 'उतनी दूर' इत्यादि।
अनिश्चयवाचक : जाआन जागार 'कोई बात', जाआएं 'कोई आदमी' इत्यादि।
नीचे हम इनकी चर्चा किंचित विस्तार के साथ करेंगे:

पुरूषवाचक सर्वनाम :

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
उत्तम पु.	आञ 'मैं'	आलाङ 'हम दोनों'	आबु 'हमलोग' (श्रोता रहित)'
		आलाङ 'हम दोनों'	आले 'हमलोग' (श्रोता रहित)'
मध्य पु.	आम 'तुम/तू'	आबेन 'तुमदोनों'	आपे 'तुमलोग'
अन्य पु.	आएः 'वह'	आकिङ 'वे दोनों'	आको 'वे लोग'

उपरोक्त रूप सिर्फ वाक्य के प्रारंभ में प्रयुक्त होते हैं। वाक्य के मध्य और अंत में इनका रूप प्रारंभिक 'आ' विहीन होता है। जैसे, आञ सेनोःताना 'मैं जा रहा हूँ' के दूसरे (वैकल्पिक) रूप सेनोः तानाञ में सिर्फ वाक्यान्त ञ ही सर्वनाम है।
द्रष्टव्य :

1. मध्यम पुरुष एकवचन में विधिवाक्यों में क्रिया के साथ प्रयुक्त होनेवाले कर्त्ता के रूप में सर्वनाम का रूप में होता है, और कर्म के रूप में विकल्प से मा।

जैसे,

कामिमे 'काम करो।'

लेलमेआञ
लेलमाञ } 'मैं तुम्हें देखूँगा।'

वाक्य मध्य में व्यंजन के बाद आने पर कर्त्तारूप म का एम और ञ का एञ होता है। जैसे,

नाआः जाकेदेम (जाकेद + एम) दुबाकाना। 'अभी तक बैठे हुए हो।'

तिकिनेञ (तिकिन+ञ) सेना। 'दोपहर को जाऊँगा।'

2. क्रिया से बने कर्त्तारूप में अन्य पुरूष एक वचन का रूप आएः न होकर इः होता है। जैसे,

सेनोः तानिः (सेनोःतान+इः) 'जानेवाला'

कामिकेनिः (कामिकेन+इः) 'जिसने काम किया'

3. कर्म रूप में अन्यपुरूष एकवचन में जीववाचक संज्ञा के लिए इ और निजीवाचक संज्ञा के लिए ए का प्रयोग होता है। जैसे,

लेलिआञ (= लेल+इ+आ+ञ) 'मैं उसे (जीवधारी को) देखूँगा।'

लेलेआञ (=लेल+ए+आ+ञ) 'मैं उसे (निर्जीव) को देखूँगा।'

वाच्यखण्ड में हम इस पर कुछ और विचार करेंगे।

4. पुरूषवाचक सर्वनामों के कर्त्ता रूप में जोर देने के लिए उनके दुगुनीकृत रूप प्रयोग में लाए जाते हैं। जैसे,

आको हिजुःताना 'वे आ रहे हैं।'

आकोको हिजुःतान 'निश्चित रूप से वे आ रहे हैं।'

संकेतवाचक सर्वनाम :

मुण्डारी में तीन प्रकार के संकेतवाचक सर्वनाम होते हैं।

(क) आपेक्षाकृत निकटवर्ती संज्ञाओं के लिए ना, नि, ने 'यह'।

(ख) अपेक्षाकृत मध्यवर्ती संज्ञाओं के लिए आन, इन, एन, 'वह'।

(ग) अपेक्षाकृत दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए हान, हेन, हेन 'वो'।

उदाहरण,

ना होड़ो 'यह आदमी'

आन होड़ो 'वह आदमी'

हान होड़ो 'वो आदमी'

द्रष्टव्य :

1. ऊपर 'यह', 'वह' और 'वो' प्रत्येक के लिए तीन रूप दिए गए हैं। इनका भेद भौगोलिक ही है। जैसे, निर्जीव संज्ञाओं के लिए सामान्यत: ने (नेआ किताब 'यह किताब') का प्रयोग मध्य मुण्डारी में और नि (निआ किताब 'यह किताब') का प्रयोग पूरबी मुण्डारी में होता है। वैसे प्रस्तुत लेखक का विचार है कि हर मुण्डारी इलाके में प्रत्येक स्थिति के लिए तीन में से एक विकल्प चुन लिया है।

2. वस्तुत: संज्ञाओं की अपेक्षाकृत दूरी बताने के लिए मुण्डारी में 9 विभिन्न क्रमगत स्तर दिखाए जा सकते हैं : निकटवर्ती संज्ञाओं के लिए तीन स्तर, मध्यवर्ती संज्ञाओं के लिए तीन और दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए तीन। नीचे के मानचित्र में हमने यही दिखाने की कोशिश की है :

.... हेन ....

.... हेन ....

.... हिन ....

.... आन ....

.... एन ....

.... इन ....

.... ना ....

.... ने ....

.... नि ....

●

व्यक्ति

यह भी द्रष्टव्य है कि निकटवर्ती संकेतवाचक सर्वनामों के ठीक उल्टे प्रयोग से मध्यवर्ती सर्वनामों (नि → इन इत्यादि) और मध्यवर्ती संकेतवाचक सर्वनामों में ह के उपसर्गात्मक प्रत्योग से दरवर्ती संकेतवाचक सर्वनामों का निर्माण हुआ है। संकेतवाचक सर्वनामों का यह भेद मुण्डारी और इससे संबंधित भाषाओं को समस्त भारतीय भाषाओं में एक अत्यंत ही विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम :

निम्नलिखित रूप प्रयुक्त होते हैं :

ओको { आ 'कौन – सा' (निर्जीव)
नि: 'कौन – सा' (सजीव)

चान/ कान /चिकान {आ: 'क्या' (निर्जीव)
नि: 'क्या' (सजीव)}

चिलकान {आ: 'किस तरह का' (निर्जीव)
नि: 'किस तरह का' (सजीव)}

चिमिन / चिमिनाङ 'कितना'

उदाहरण,

ओकोआ दारू 'कौन – सा पेड़'

ओकोनि: बुदुतानि: 'बुदु कौन – सा व्यक्ति है?'

ओकोकोम इदिकोआ? 'किन (दो से अधिक जीवधारियों) को ले जाओगे?'

नि: चिकानि: तानि:? 'यह क्या (सजीव) है?'

नेआ चिकाना: ताना:? 'यह क्या (निर्जीव) है?'

एना चिकान दारु ताना:? 'वह कौन–सा पेड़ है?'

चाना:/काना:/चिकाना:म नाम ताना? 'तुम कौन–सी चीज खोज रहे हो?'

चिमिनाङेम नाम ताना 'कितना चाहते हो?'

द्रष्टव्य :

अन्यपुरूष द्विवचन और बहुवचन में प्रश्नवाचक सर्वनामों की रचना आ एकवाचन के आधार पर ही होती है। इस रचना में ओकोए के बाद ता का आगम होता है :

ओकोए ताकिं हिजु:ताना? 'कौन (दो व्यक्ति) आ रहे हैं?'

ओकोए ताकोआ: ओड़ा:ताना:? 'किन (दो से अधिक व्यक्ति) का घर है?'

निश्चयवाचक सर्वनाम:

संकेतवाचक सर्वनामों के साथ – मिनाङ के प्रत्ययरूप में प्रयोग करने से निश्चयवाचक सर्वनामों का निर्माण होता है। जैसे,

ने } + मिनाङ = निमिनाङ
नि }
ना + मिनाङ = नामिनाङ
} 'इतना'

एन } + मिनाङ = इमिनाङ
इन }
आन + मिनाङ = आमिनाङ
} इतना

हेन } + मिनाङ = हिमिनाङ
हिन }
हान + मिन = हामिनाङ
} 'उतना'

उदाहरण,

नामिनाङ/ निमिनाङ रेआ: चिमिनाङ गोनोङ? 'इतने का कितना दाम?'

इमिनाङ/आमिनाङ दो काले दाड़िआ:। 'उतना तो हम नहीं सकेंगे।'

हिमिनाङ/हामिनाङ पे काजिताना! 'उतना कहते हो!'

द्रष्टव्य :

1. मिन के पहले संकेतवाचक सर्वनामों के अन्त्य न का लोप होता है।

2. स्वर साम्य सिद्धान्त के अनुसार ने+मिनाङ = निमिनाङ, एन + मिनाङ = इमिनाङ, और हे + मिनाङ = हिमिनाङ हुआ है।

3. माप की इकाई के रूप में (विशेषण के अर्थ में) अन्तिम आं का लोप होता है। जैसे,

नामिन/निमिन माराङ होड़ो 'इतना बड़ा आदमी!'

आमिन/इमिन टाकाते काए:नाम जाना 'उतने रूपयों से नहीं मिला।'

हामिन/हिमिन सांगिनरे: दुबकेना 'उतनी दूर बैठा था।'

अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

जा (न) – जेता (न) – 'कोई /कुछ'

इन दोनों रूपों में सामान्यतया जेता (न) का प्रयोग निषेधात्मक/ नाकारात्मक अर्थ में होता है।

उदाहरण,

जाआना: ओमाञ में 'मुझे कोई चीज दो।'

जेताना: बानो: 'कुछ (भी) नहीं हैं।'

5. विशेषण खण्ड

संज्ञा शब्दों के गुण बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। बुगिन होड़ो 'अच्छा आदमी' में बुगिन 'अच्छा' शब्द से होड़ो 'आदमी' की विशेषता बताई गई है। मुण्डारी में सामान्यत: निम्न प्रकार के विशेषण गिनाए जा सकते हैं :

1. गुणवाचक :

जिलिङ	'लम्बा'	एदकान	'बुरा'
चाकार	'चौड़ा'	हुड़िङ	'छोटा'
होसोड़ो	'झूठा'	माराङ	'बड़ा'
सारते	'सच्चा'	हामबाल	'भारी'

नावा	'नया'	राबाल	'हल्का'
पुरना	'पुराना'	गोजा	'तेज, नुकीला'
सालाङगि	'ऊँचा'	चापेद	'चपटा'
दिंगाए:	'नाटा'	केटे:	'कड़ा'
हेनदे	'काला'	लेबे:	'नर्म'
पुण्डि	'सफेद'	हेड़ेम	'मीठा'
आरा:	'लाल'	हाड़ाद	'तीता'
सासाङ	'पीला'	जोजो	'खट्टा'
गादेद	'हरा'	मोरोए:	'खट्टा'
मुलि	'सीधा'	सिबिल	'स्वादिष्ट'
बाङका	'टेढ़ा'	हेबेन	'कसैला'
बोरोड़ो	'फिसलन भरा'	बेरेल	'कच्चा'
हासाराद	'खुरदरा'	जारोम	'पका'
लोलो	'गर्म'	गादर	'गदराया हुआ'
तुतुकुन	'ठंढा'	पेटो:	'कच्चा'
बुगिन	'अच्छा'	ताबुइ:	'नर्म'

2. संख्यावाचक विशेषण :

(क) गणनाबोधक संख्याबोधक विशेषण शब्द –

मिआद/मोयोद 'एक' तुरिआ 'छह'

बारिआ 'दो' एएआ 'सात'

आपिआ 'तीन' इरालिआ 'आठ'

उपुनिआ 'चार' आरेआ 'नव'

मोड़ेआ 'पाँच' गेलेआ 'दस'

गेल मिआद 'ग्यारह' (=10+1)

गेल इरालिआ 'अठारह' (= 10+8)

मिदहिसि 'बीस' (= 1×20)

मिदहिसि मिआद एक्कीस (= 1×20+1)

उपरोक्त संख्याओं के संक्षिप्त रूप भी होते हैं जो संख्या में अन्तिम आ निकाल देने से बचते हैं। इनका प्रयोग सिर्फ माप की इकाइयों के पहले होता है। जैसे,

बारिआ टाका 'दो रूपये'

बार टाकारेन सिम 'दो रूपये की मुर्गी'

मोणेआ पुइला 'पाँच पैले'

मोणे पुइला बाबा 'पांच पैला धान'

अपवाद : मिआद/मोयोद का संक्षिप्त रूप मिद/मोद होता है। जैसे,

मिआद चाटु 'एक हांड़ी'

मिद चाटु बाबा 'एक हांड़ी धान'

(ख) वितरणबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्द —

गणनाबोधक विशेषण शब्दों की प्रथम मात्रा के द्विगुणाकरण से बनते हैं। जैसे,

बारिआ → बाबारिआ 'दो-दो'

आपिआ → आपापिआ 'तीन-तीन'

मोणेआ → मोमोणेआ 'पाँच-पाँच'

(ग) आवृतिबोधक संख्यावाकचक विशेषण शब्द —

गणनाबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्दों के संक्षिप्त (अंतिम आ रहित) रूप में सा प्रत्यय लगाने से बनते हैं। जैसे,

मोणे सा 'पांच बार'

गेल बारसा 'बारह बार'

हिसि तुरिसा 'छब्बीस बार'

(घ) समुदायबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्द—

गणनाबोधक संख्यावाचक विशेषण शब्दों के बाद गालेद प्रत्यय जोड़ने से बनते हैं। जैसे,

आपिआ गालेद 'तीनों'

हिसि एएआ गालेद 'सताइसों'

गेल मोड़ेंआ गालेद 'पंद्रहों'

द्रष्टव्य :

(अ) सिर्फ बार दो के लिये आन प्रत्यय जोड़ने से एक समुदाय बोधक संख्या वाचक विशेषण शब्द बारान 'दोनों' बनता है। दूसरे संख्या शब्दों के लिए यह नियम लागू नहीं होता। मुण्डारी की बहन भाषा संताली में इस प्रक्रिया का विस्तृत प्रयोग होता है। किन्तु वहाँ आन प्रत्यय न होकर न अन्तरय के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे,

बाद → बारान 'दोनों

पोन → पोनोन 'चारों' इत्यादि।

हिन्दी के क्रमबोधक संख्यावाचक विशेषण की अभिव्यक्ति के लिए मुण्डारी में अपेक्षाकृत एक लम्बे विवरणात्मक रूप का सहारा लिया जाता है। हिन्दी के संख्या-वां जैसे कोई सरल विधि वहाँ नहीं है। इस तरह,

उपुनिआ होनकोआते तायोम रेन होन

'चार लड़कों के बाद का लड़का = पाँचवां लड़का।'

3. संकेतवाचक, प्रश्नवाचक और परिमाणवाचक विशेषण शब्दों की रचना तत्तत् सर्वनाम शब्दों से होती है। इस तरह,

(अ) संकेतवाचक विशेषण शब्द –

ने होड़ो 'यह आदमी'

एन सेता 'वह कुत्ता'

हेन बुरू 'वो पहाड़'

(इ) प्रश्नवाचक विशेषण शब्द –

चिमिनं टाका 'कितने रूपये'

चिलकान सादोम 'कैसा घोड़ा'

(उ) परिणामवाचक विशेषण शब्द –

इमिनाङ बाबा 'उतना धान'

निमिनाङ गोनोङ 'इतना दाम'

सोबेन दारू 'सभी पेड़'

गोटा दिसुम 'सारा देश'

अन्य विशेषण शब्दों का निर्माण :

दो प्रकार से अन्य विशेषण शब्दों का निर्माण होता है :

(क) क्रिया रूपों से :

क्रिया पूरक आ (क्रिया रूप में अन्तिम तत्त्व) के निकाल देने से शेष रूप विशेषण होता है। जैसे,

कामितान होड़ो 'काम करता हुआ/कर रहा आदमी'

निराकान दासि 'भागा हुआ नौकर'

लेलाकान होड़ो 'देखा गया आदमी'

(ख) कारक प्रत्ययों से :

कुछ कारक प्रत्ययों से भी विशेषण शब्दों का निर्माण होता है। जैसे,

राँची रेन होड़ो 'राँची का आदमी'

आपिआ काटातेन उरिः 'तीन पैरों वाला बैल'

विशेषण की अवस्था

मुण्डारी विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं :

1. हीनावस्था : विशेषण + नोः
2. मूलावस्था : विशेषण
3. उत्तमावस्थाः

इस तरह

हेनदे नोः 'किंचित् काला'
हेनदे 'काला'
हेनदे उतार 'सबसे काला'

द्रष्टव्य :

हिन्दी के विशेषणों की उत्तरावस्था के सामानान्तर मुण्डारी में शब्द रचना करने के लिए सर्वनाम/संज्ञा+आतेपुराः+विशेषण अभिव्यक्ति का प्रयोग होता है। इस तरह,

कुइलाआते पुराः हेनदे 'कोयला से भी ज्यादा काला'
आञाआते पुराः सेणाआन होड़ो 'मुझसे अधिक ज्ञानी आदमी'

6. क्रिया विशेषण खण्ड

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं। मुण्डारी में निम्न प्रकार के क्रिया विशेषण शब्द गिनाए जा सकते हैं :

1. स्थानवाचक विशेषण शब्द –

(क) स्वतंत्र स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द –

चेतान	'ऊपर'	आयार	'आगे'
लातार	'नीचे'	तायोम	'पीछे'
बितार	'भीतर'	सानामाङ	'सामने'
बाहार	'बाहर'	सुबा	'तले'
नाणेः	'नजदीक'	ताला	'बीच में'
सांगिन	'दूर'	दानाङ	'आड़ में'

(ख) संकेतवाचक सर्वनामों के बाद रे, ते, आते, ताःरे, ताःते, ताःआते (तागाते), साः रे, साःआते (सागते), जोड़ने से बनते हैं। जैसे,

एनरे	'वहाँ पर'	एन तागाते	'उस जगह से'

एनते	'वहाँ (को)'	एन सा:रे	'उस तरफ (में)'
एनते	'वहाँ से'	एन सा:ते	'उस तरफ (को)'
एनता:रे	'उस जगह (पर)'	एनसागाते	'उस तरफ (से)'
एनता:ते	'उस जगह (को)'		

इसी तरह अन्य संकेतवाचक सर्वनामों से भी क्रिया विशेषण शब्द बनाए जा सकते हैं।

2. कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द –

(क) स्वतंत्र कालवाचक क्रिया विशेषण शब्द –

तिसिङ	'आज'	खाने–खाने	'बार–बार'
गापा	('आगामी') कल'	मिसा–मिसा	'एकेक बार'
होला	'(गत) कल'	रोका	'उसी दिन'
मेआङ	'परसों'	नाए:के	'बाद में'
तुरमेआङ	'नरसों'	लिक	'बाद में'
नाआ:	'अभी'	नेआ:	'थोड़ी देर पहले'
नाआ: जाकेद	'अबतक'	मा	'गत साल'
सेकेड़ा	'जल्दी'	कालोम	'आगामी वर्ष'
माणि/मांड़ि	'धीरे'	सातोम	'आगामी दूसरे वर्ष'
सिदा	'पहले'	होनदेर	'आगामी परसों'
तायोमते	'पीछे'	दिनाकि	'रोज'
टुण्डु रे	'अन्त में'	मोसेद	'गत दूसरा साल'
तिसिङ गापा	'आजकल'	आउरि	'अभी नहीं'
जानाओ	'रोज'	निसुकान	'इस बार'
जाओगे	'हमेशा'	गोटासिंगि	'दिनभर'
सिंगिबुड़ा	'सारादिन'		

(ख) संकेतवाचक सर्वनामों और विशेषण शब्दों से :

इमताङ	'इस समय, तब'	निमिर गापा	'आजकल'
निमताङ	'उस समय, अब'	जां / जेता } हुलाङ	'किसी दिन'
चिमताङ	'कब'		
जेता / जां } इमताङ	'किसी समय'	चिउला	'किस दिन'

3. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण शब्द :

(क) स्वतंत्र शब्दों द्वारा :

हुड़िङलेक	'थोड़ा सा'	एटा:गे/एदका	'अत्यन्त'
बाराबारि:	'बराबर'	मेर–मेर	

(ख) संकेतवाचक सर्वनाम और विशेषण शब्दों द्वारा –

निमिनाङ 'इतना'	चिमिनाङ	'कितना'	
इमिनाङ	'उतना'	बेटेकान	'अत्यन्त ही'

4. रीतिवाचक क्रिया विशेषण शब्द :

(क) स्वतंत्र शब्दों द्वारा :

आचाका (गे)	'अचानक ही'	सेकेड़ा	'जल्दी ही'
जारूडु	'अवश्य'	सामा(गे) उपाए:(गे)	'व्यर्थ (ही)'
आए:ते/आपानते	'अपने आप'	बादते/मोटाइते	'जबरदस्ती'
माणिते	'धीरे (से)'	सारते (गे)	'सचमुच ही'

(ख) संकेतवाचक सर्वनाम और विशेषण शब्दों द्वारा :

ने (ले)का	'इस तरह'	चिलका	'किस तरह'
एन (ले)का	'उस तरह'	जां लेका	'किसी तरह'

(ग) क्रिया प्रत्ययों के बाद ते, आते, लो: ते प्रत्यय जोड़कर —

लेलजादते	'देखते हुए'	साबाकादाते	'पकड़े हुए'
बाटिआकानाते	'लेटे/गिरे हुए'	कामितानलो:ते	'काम करते हुए'

(घ) क्रिया प्रत्ययों के द्विगुणीकरण द्वारा :

हिजु:ते हिजु:	'निश्चित रूप से आना'
निरतान निरतान	'भागते–भागते'

7. क्रिया खण्ड

जिस शब्द से किसी कार्य के होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं। जैसे,

ओल	'लिखना'	दाल	'मारना'/'पीटना'
लेल	'देखना'	दुब	'बैठना'
साब	'पकड़ना'	दुडुम	'सोना'

मुण्डारी क्रिया, हिन्दी की ही तरह, दो प्रकार की होती है :

सकर्मक और अकर्मक। सकर्मक क्रिया के प्रयोग में किसी कर्म का होना अपेक्षित हैं। जैसे,

आए: होराए: लेलताना 'वह रास्ता देख रहा है।'

आए: ओलताना 'वह (कुछ) लिख रहा है।'

यहाँ पहले उदाहरण में लेल 'देखना' क्रिया के साथ प्रत्यक्ष रूप से होरा 'रास्ता' कर्म का प्रयोग हुआ है। दूसरे उदाहरण में परोक्ष रूप से कर्म का प्रयोग हुआ है, अर्थात् आए: ओलताना 'वह लिख रहा है।' में वह 'कुछ' लिख रहा है, यह अनुमानित है। अकर्मक क्रियाओं के साथ ऐसी कोई बात नहीं है। जैसे,

मनए दुबाकानाए: 'मनए बैठा (हुआ) है।'

होन दुडुम तानाए: 'बच्चा सो रहा है।'

यहाँ पर हम यह कह दें कि सकर्मक–अकर्मक का यह भेद मुण्डारी में हिन्दी की तुलना में कम कठोर है। जैसे, सेन 'चलना' का प्रयोग मुण्डारी में सकर्मक और अकर्मक दोनों रूपों में होता है जबकि हिन्दी में यह क्रिया सिर्फ सकर्मक ही मानी गई है। सकर्मक अर्थ में चलने का अर्थ 'रास्ते को चलना' होता है। उसी तरह दुब 'बैठना' हिन्दी में अकर्मक है लेकिन मुण्डारी में यह सकर्मक रूप में भी प्रयुज्य है। जैसे,

होनदुब तानाए: 'बच्चा बैठ रहा है।'

होन दुब ताइपे 'बच्चे को बैठा दो।'

हमारे विचार से मुण्डारी में विशुद्ध सकर्मक/अकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी परीक्षा यह है कि उसका प्रयोग परार्थ बोधक वाच्य (क्रिया+अ+गौणकर्म+क्रि.प्र, देखिए पृ. 38) में हो सकता है या नहीं। परार्थ–बोधक वाच्य में प्रयुज्य क्रिया ही विशुद्ध रूप से सकर्मक मानी जानी चाहिए। जैसे, उदाहरण स्वरूप विशुद्ध सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं:

ओलाले तानाको 'वे हमारे लिए लिख रहे हैं'। (ओल)

कामिआपे तानाले 'हम तुम्हारे लिए काम कर रहे हैं।' (कामि)

दा: आउआलेपे 'तुम हमारे लिए पानी ला दो।' (आउ)

विशुद्ध अकर्मक क्रियाओं के साथ निम्नलिखित प्रयोग गलत होंगे :

रेंगेगाको तानाले 'उनके लिए हमें भूख लग रही है।'

रूआञ मे 'तुम मेरे लिए बीमार पड़ो।'

कुगालेतान ताइकेनाको 'ये हमारे लिए खाँसते थे,'

आगत शब्दों के क्रिया रूप :

1. हिन्दी प्रभृत आर्य भाषाओं से आगत क्रिया शब्दों में– आ ओ प्रत्यय लगाकर मुण्डारी क्रियाओं का निर्माण होता है :

उदाहरण,

लगाओ (लगना/ लगाना)	रोकाओ (रूकना/रोकना)
डुबाओ (डुबना / डुबाना)	मेटाओ (मिटना/मिटाना)
पुराओ (पुरा होना/पुरा करना)	बानचाओ (बचना/बचाना)

2. कुछ सीमित शब्दों में–तिं प्रत्यय लगाकर मुण्डारी क्रिया रूप बनते हैं। जैसे,

मानातिं (मानना/मनाना)

बुजातिं (समझना/समझाना)

साआतिं (सहना)

बुलातिं (बूलना = चक्कर मारना)

क्रिया रूप के व्याकरणगत तत्त्व :

मुण्डारी क्रिया रूप में मूलक्रिया के अतिरिक्त निम्नलिखित व्याकरणगत रूप पाए जाते हैं :

(क) काल

(ख) विधि/निषेध

(ग) वाच्य

(घ) क्रिया पूरक अ

(ङ) कर्त्ता/ कर्ममेलक सार्वनामिक तत्त्व

काल :

मुण्डारी में काल निर्णय आस्पद (aspect) सूचक प्रत्ययों ता, ना, आका, ले, के और कर्त्ता/कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों द, न द्वारा होता है। आस्पद क्रिया के होने की अवस्था बताते हैं कि उस क्रिया में कर्त्ता अथवा कर्म पर जोर दिया गया है। मुण्डारी के आस्पद प्रत्यय सामान्यतया कर्त्ता/कर्म सूचक प्रत्ययों के साथ ही व्यवहृत होते हैं, किन्तु विधि वाक्यों या पूर्वकालिक क्रिया रूपों में इनका प्रयोग कर्त्ता/कर्म सूचक प्रत्ययों के बिना भी होता है। इस तरह,

जोम ताम (= जोम + ता + म) 'खाए रहो।' = सामान्य पूर्णता बोधक

जोमाकाम (= जोम + आका + म) 'खाए रहो।' = बिलंबित पूर्णता बोधक

जोमजाम (= जोम + जा + म) 'खाते जाओ।' = अर्पूणता बोधक
जोमलेम (= जोम + ले + म) 'खा लो, इसके बाद' = सविकल्प पूर्णता बोधक
जोमकेम (= जोम + के + म) 'खालो, नहीं तो' = निर्विकल्प पूर्णता बोधक।

द्रष्टव्यः

सीमित अर्थ में, केवल भविष्यत काल में और विधि क्रिया में एक अन्य सविकल्प पूर्णताबोधक आस्पद सूचक प्रत्यय कोः का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग कर्त्ता/ कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों के बिना ही होता है। जैसे,

जोमकोःपे 'तुम पहले खाने के काम में लग लो' (= तुम पहले खालो)
दुबकोः पे 'तुम पहले बैठने के काम में लग लो' (= तुम पहले बैठ लो)

कर्त्ता/कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों न/द के उदाहरण,

माण्डिको जोमताना	'वे खाना खा रहे हैं'
माण्डिको जोम तादा	'वे खाना खा रहे हैं'।
दारू ले माः केना	'हम पेड़ काटने के काम में लगे थे।'
दारू ले माः केदा	'हमने पेड़ काटा।'

आस्पद सूचक प्रत्ययों और कर्त्ता/कर्म केन्द्र सूचक प्रत्ययों के संयोग से मुण्डारी में निम्नलिखित काल भेद किए जाते हैं :

1. वर्त्तमान काल :

(क) क्रिया+तान, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्मतटस्थ (= अकर्मक और सकर्मक, दोनों प्रकार की क्रियाओं के साथ प्रयुज्य)।

उदाहरण,

दुबतानाएः (= दुब + तान + आ + एः) 'वह बैठ रहा है/बैठता है।'
कामितानाबेन (=कामि+ तान+ आ + बेन) 'तुम दोनों काम कर रहे हो।'
रेंगेःतानाको (= रेंगेः + तान + आ + को) 'उन्हें भूख लग रही है।'

(ख) क्रिया + जाद कर्मकेन्द्रित, सकर्मक :

उदाहरण,

ओलजादाएः (= ओल + जाद + आ + एः) 'वह (कुछ) लिख रहा है।'
आड़िको सी जादा (= आड़ि + सी + जाद + आ) 'वे खेत जोत रहे हैं।'

द्रष्टव्य :

(क) अनुभव संबंधी क्रियाओं के बाद जाद+कर्त्ता मेलक सार्वनामिक तत्त्व (पूरे विवरण के लिए देखिये पृष्ठ 36) के रहने पर भी वर्त्तमान काल का बोध होता है।

जैसे,

उरि: को राबाङ जादकोआ। 'मवेशियों को ठण्ड लग रही है।'

सोमा रेंगे:जा:इआ। 'सोमा को भूख लग रही है।'

आञ लगा जा:ञा। 'मुझे थकावट लग रही है।'

(ख) वाक्य में कर्म के रहने पर कर्त्ता मेलक सार्वनामिक तत्त्व कर्म के साथ आता है। जैसे,

नागु तोआए: आगुजादा। 'नागु दूध ला रहा है।'

(आले) माण्डिले जोमताना। 'हम खाना खा रहे हैं।'

(आपे) चिटिपे ओल केदाचि? 'क्या तुमने चिट्ठी लिखी?'

उपरोक्त उदाहरणों में ए:, ले और पे कर्त्ता मेलक सार्वनामिक तत्त्व है।

(ग) चेतान मुण्डारी में जाद की जगह याद और कहीं–कहीं लाद का भी प्रयोग होता है।

2. भूतकाल :

(क) क्रिया + लेद, पूर्णभूत, कर्मकेन्द्रित (= सकर्मक)।

उदाहरण,

जोम लेदाए:। 'उसने (कुछ) खाया था।'

लेल लेदाए:। 'उसने (कुछ) देखा था।'

द्रष्टव्य, :

विकल्प से लेद + आ = ला: और लेद + इ = लि:।

उदाहरण,

माण्डिञ जोमला:। 'मैंने खाना खाया था।'

आए:ञ लेललि:आ। 'मैंने उसे देखा था।'

(ख) क्रिया + लेन, पूर्णभूत, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्म तटस्थ।

जैसे,

हिजु:लेनाए:। 'वह आया था।'

उयु: लेनाञ। 'मैं गिरा था।'

द्रष्टव्य :

सकर्मक क्रिया के बाद 'लेन' आने से वाच्य परिवर्त्तन (कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में) होता है। किन्तु काल वही (पूर्णभूत ही) रहता है।

जैसे,

जोम लेनाए:। 'वह खाया गया था।'
पिड़ि सी लेना। 'मैदान जोता गया था।'
चिटि ओललेना। 'चिट्ठी लिखी गई थी।'

(ग) क्रिया + केद, सामान्यभूत, कर्म केन्द्रित (सकर्मक)

उदाहरण,

माण्डिञ जोमकेदा। 'मैंने खाना खाया।'
ओड़ा:ले लेलकेदा। 'हमने घर देखा।'
चिटि को ओलकेदा। 'उन्होंने चिट्ठी लिखी।'

द्रष्टव्य :

मध्यमुण्डारी में 'केद' के बाद सजीव अन्यपुरूष एकवचन का कर्मरूप इ के आने पर सम्मिलित रूप कि: होता है।

जैसे,

लेल कि:आको। 'लोगों ने उसे देखा।'

(घ) क्रिया + केन, पूर्णभूत, कर्त्ता केन्द्रित, कर्मतटस्थ।

उदाहरण,

माण्डिञ जोमकेना। 'मैंने खाना खाया था।'
दुबकेनाञ। 'मैं बैठा था।'
कामिकेनाञ। 'मैंने काम किया था।'
सेनकेनाको। 'वे गये थे।'

(ङ) क्रिया + जान, सामान्यभूत, कर्त्ता केन्द्रित, कर्मतटस्थ।

उदाहरण,

दुब जानाए:। 'वह बैठा।'
उयु: जानाए:। 'वह गिरा।'
दुडुम जानाको। 'वे सो गए।'

द्रष्टव्य :

सकर्मक क्रिया के बाद जान के आने पर वाच्य परिवर्त्तन (कर्तृवाच्य से कर्म वाच्य में) होता है। जैसे,

जोम जानाए:। 'वह खाया गया।'
चिटि ओलजाना। 'चिट्ठी लिखी गई।'
लोयोङ सी जाना। 'खेत जोता गया।'

(च) क्रिया + आकाद, आसन्नभूत, कर्मकेन्द्रित (सकर्मक)।

उदाहरण,

तोवाञ नूआकादा। (नू+आकाद+आ) 'मैंने दूध पीया है।'

राँचीम लेलाकादा? 'तुमने राँची देखा है?'

टाकाले साबाकादा। 'हमने रूपया पकड़ा है।'

द्रष्टव्य :

(क) उपरोक्त 'आकाद' के ही समानार्थक 'ताद', प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। हमें लगता है कि इन दो प्रयोगों का अन्तर भौगोलिक है। लातार मुण्डारी में ताद का प्रयोग अधिक होता है।

(ख) हासादाः मुण्डारी में आकाद/ताद के बाद सजीव अन्य-पुरूष एकवचन का कर्मरूप 'इ' आने पर इनका आकाः/ताः होता है। जैसे,

लेलाकादिआञ → लेलाकाःइआञ 'मैंने उसे देखा है।'

लेलातादिआञ → लेलताःइआञ 'मैंने उसे देखा है।'

(ग) लातार मुण्डारी में 'ताद' के बाद उपरोक्त 'इ' के आने पर 'इ' के पहले 'जा' का आगम होता है। जैसे,

लेल तादजिआम चि का? 'उसे तुमने देखा है कि नहीं?'

(घ) क्रिया + आकान, आसन्नभूत, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्मतटस्थ।

उदाहरण,

सोमाएः दुबाकाना। 'सोमा बैठा हुआ है।'

होनकिङ दुडुमाकाना। 'बच्चे सोये हुए हैं।'

हिजुःआकाना को। 'वे आए हुए हैं।'

द्रष्टव्य :

सकर्मक क्रिया के बाद 'आकान' के आने पर वाच्य परिवर्त्तन (कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में) होता है। जैसे,

लेलाकानाको। 'वे (लोग) देखे गए हैं।'

चिटि ओलाकाना। 'चिट्ठी लिखी गई है।'

कुमबुडुइः साबाकाना। 'चोर पकड़ा गया है।'

7. क्रिया+आद, आसन्नभूत, कर्मकेन्द्रित (सकर्मक), परार्थ बोधक

उदाहरण,

सुकुआदिआएः (= सुकुआ:इआएः) 'उसने उसे पसन्द किया।'

उदुबादिआञ (= उदुबा: इआञ) 'मैंने उसे बताया।'

चिटि को ओलादिआ (= चिटि को ओला:इआ) 'उन्होंने उसे चिट्ठी लिख दी।'

8. क्रिया+आन, आसन्नभूत, कर्मकेन्द्रित, सकर्मक, स्वार्थबोधक।

उदाहरण,

उलिञ जोमाना। 'मैंने आम खाया है।' (=मुझे आम खाने का अनुभव है।)

नागु होराए: लेलाना। 'नागु ने रास्ता देखा है।'

(=नागु को वही रास्ता देखने का अनुभव है।')

हाइकोले साबाना। 'हमने मछली पकड़ी है।

(= हमें मछली पकड़ने का अनुभव है।'

9. क्रिया + आकाद/ताद ताइकेन पूर्व पूर्णभूतकाल, कर्मकेन्द्रित (सकर्मक)

उदाहरण,

माण्डिको जोमाकाद ताइकेना। 'वे लोग खाना खाए हुए थे।'

चिटिले ओलाकाद ताइकेना। 'हम चिट्ठी लिखे हुए थे।'

होराबेन लेलाकाद ताइकेना। 'तुम रास्ता देखे हुए थे।'

द्रष्टव्य :

विकल्प से आकाद/ताद और ताइकेन के बीच कर्त्ता का सार्वनामिक रूप आ सकता है। जैसे,

माण्डिको जोमाकाद ताइकेना। या

माण्डि जोमाकादको ताइकेना। 'वे खाना खाए हुए थे।'

10. क्रिया + जादताइकेन, तात्कालिक भूतकाल, कर्मकेन्द्रित (सकर्मक)

उदाहरण,

टाकाले नामजाद ताइकेना। 'हम रूपया पाते/पाया करते थे।'

काजिको बाइतान ताइकेना। 'वे बात बनाते/बनाया करते थे।'

द्रष्टव्य :

(क) विकल्प से कर्त्ता का सार्वनामिक रूप जाद और ताइकेन के बीच आ सकता है। इस तरह, हम उपरोक्त उदाहरणों को

'टाका नामजादले ताइकेना'

'काजि बइतानको ताइकेना' के रूप में भी लिख सकते हैं।

(ख) चेतान मुण्डारी में जाद = 'याद' और कहीं-कहीं 'लाद' भी होता है।

(ग) चेतान मुण्डारी में कहीं-कहीं विकल्प से 'के' या 'ताइ' का लोप होता है।

इस तरह,

टाका नामजाद ताइकेना को = टाका नामजाद ताइनाको

'वे रूपया पाया करते थे।'

या टाका नामजाद केनाको 'वे रूपया पाया करते थे।'

11. क्रिया + तान ताइकेन, तात्कालिक भूतकाल, कर्त्ताकेन्द्रित, कर्मतटस्थ।

उदाहरण,

कामितान ताइकेनाको। 'वे काम (किया) करते थे।'

दुबतान ताइकेना ले। 'हम बैठने/ बैठा करते थे।'

ओलतान ताइकेनापे। 'तुम लिखते/लिखा करते थे।'

द्रष्टव्य :

(क) विकल्प से कर्त्ता का सार्वनामिक रूप 'तान' और 'ताइकेन' के बीच भी आ सकता है। इस तरह,

कामितानको ताइकेना = कामितान ताइकेनाको। 'वे काम (किया) करते थे।'

(ख) चेतान मुण्डारी (राँची के आस-पास) 'ताइ' का लोप होता है। इस तरह उपरोक्त उदाहरण का निम्नलिखित रूप—

कामितानकेनाको। 'वे काम (किया) करते थे।'

3. भविष्यत् काल :

मुण्डारी में भविष्यत् काल प्रत्यय हीनता (शून्य प्रत्यय) द्वारा प्रकट किया जाता है। जैसे,

कामिआए: (= कामि + θ + आ + ए:)। 'वह करेगा।'

दुबाञ (= दुब + θ + आ + ञ)। 'मैं बैठूंगा।'

सेनाले (= सेन + θ + आ + ले)। 'हम जायेंगे।'

द्रष्टव्य :

(क) क्रिया की प्रथम मात्रा के दीर्घीकृत या द्विगुणित रूप के भविष्यत् काल में प्रयोग से विकल्प से वर्त्तमान का भी बोध होता था। इस अर्थ में क्रिया कर्त्ता की आदत बताती है। इस तरह,

जोओमाए:/जोजोमाए: 'वह खाता है = उसे खाने की आदत है।'

(ख) विशेषण शब्दों के इस काल में प्रयोग से वर्त्तमान काल का बोध होता है, जैसे,

हेनदेआए:। 'वह काला है।'

सालांगिआम। 'तुम ऊँचे हो।'

सामान्यता ऐसे प्रयोगों में क्रियापूरक 'आ' के पहले बल बोधक को 'ही' का प्रयोग होता है। इस तरह,

दा: एताङ गेआ। 'पानी पतला ही है।'

(ग) सार्वभौमिक सत्य व्यक्त करने के लिए इसी काल का प्रयोग होता है। इस तरह,

होयो का लेलो:आ। 'हवा दिखाई नहीं देती।'

सेंगेल लोलोआ। 'आग गर्म होती है।'

विधि/ निषेध :

मुण्डारी में दो प्रकार के विधि रूप होते हैं :

(क) आकांक्षा बोधक

(ख) आज्ञा बोधक

आकांक्षा बोधक:

यह विधि क्रिया या आस्पद सूचक प्रत्ययों के बाद (और विकल्प रूप से सार्वनामिक कर्त्ता के पहले) 'का' जोड़ने से प्रकट होती है। जैसे,

कामिकाञ (या आञ कामिका)। 'मैं काम् करूँ।'

दाड़िकाबु (या आबु दाड़िका)। 'हम सकें (= समर्थ हों)।'

दुबकाको (या आको दुबका)। 'वे बैठें।'

चिटिको ओलताका। 'वे चिट्ठी लिखे रहें।'

कुलाञ लेल लीका। 'मैं बाघ देखूँ।'

आज्ञा बोधक :

यह विधि सिर्फ मध्यम पुरूष के लिए क्रिया या आस्पद सूचक प्रत्ययों के बाद सार्वनामिक कर्त्ता रूप जोड़ने से प्रकट होती है। जैसे,

(आम) हिजु: मे। (तुम) 'आओ।'

(आबेन) कामिबेन। 'तुम दोनों काम करो।'

(आपे) दुबपे। 'तुम (लोग) बैठो/बैठिए/बैठें।'

(आम) नेआ लेलाकाम। 'तुम इसे देखे रहो।'

(आपे) एना इदिकेपे। 'तुम (लोग) उसे ले जाओ।'

(आबेन) किताब दो लेबेन। 'तुमदोनों पुस्तक रख लो।'

द्रष्टव्य :

नम्र निवेदन के अर्थ में वाक्य के अन्त में 'कारे' 'नहीं तो' जोड़ा जाता है। जैसे,

हिजुः कोःमे कारे। 'बुरा नहीं मानो तो (जरा, आओ)।'

यह भी द्रष्टव्य है कि यही विनम्रता क्रिया के बाद 'नोः' जोड़कर भी व्यक्त की जा सकती है। उदाहरण,

हिजुः नोः कोः पे। 'तुम (लोग) जरा आओ।'

निषेध :

मुण्डारी में निषेध के दो रूप होते हैं :

(क) नकारात्मक

(ख) अनाज्ञार्थक

नकारात्मक :

नकारात्मकता क्रिया के नहीं होने की सूचना देती है। इस प्रकार के क्रिया रूप सार्वनामिक कर्त्ता के पहले और क्रिया के पहले 'का' लगाने से बनते हैं, जैसे,

(आएः) काएः कामिताना। 'वह काम नहीं करता/कर रहा है।'

(उरिः) किं काकिङ आतिङताना। 'दो बैल चर नहीं रहे हैं।'

अनाज्ञार्थक :

अनाज्ञा किसी क्रिया को होने से रोकती है। इस प्रकार का क्रियारूप अनाज्ञार्थक विधि क्रिया के पहले 'आलो' लगाने से बनता है। किन्तु प्रयोग में अधिकत्तर इन तत्त्वों के क्रम किंचित बदलकर क्रिया अन्तिम तत्त्व होती है।

जैसे,

आलो कामिकाएः (=आलोकाएः कामि)। 'वह काम मत/न करे।'

आलो दुब काएः (= आलोकाएः दुब)। 'वह मत/न बैठे।'

द्रष्टव्य :

(क) मध्यम पुरूष के लिए अनाज्ञार्थक क्रिया के क्रिया रूप में सहायक क्रिया प्रत्यय आ का होना आवश्यक है। जैसे,

आलो दुबबेन (आलोबेन दुबा)। 'तुमदोनों मत/ न बैठो।'

आलो हिजुगम (आलोम हिजुगा)। 'तुम मत/न आओ।'

आलो सेनपे (आलोपे सेना)। 'तुम (लोग) मत/ न आओ।'

(ख) अगर क्रिया पूर्व निर्दिष्ट हो तो मूल क्रिया के न होने पर भी नाकारात्मकता या अनाज्ञार्थकता प्रकट की जा सकती है। ऐसे क्रिया रूपों में निर्दिष्ट क्रिया के बदले आः का प्रयोग होता है। जैसे,

काकोआःताना! 'वे (निर्दिष्ट क्रिया में) अपने को नहीं लगते हैं।'

आलोकाकोआ:का! 'वे (निर्दिष्ट क्रिया में) अपने को न लगाएँ।'

काञा:! 'मैं (निर्दिष्ट क्रिया में) अपने को नहीं लगाऊँगा।'

काएआ:! 'वह (निर्दिष्ट क्रिया में) अपने को नहीं लगाएगा।'

उपर्युक्त वाक्यों में 'आ:' के बदले निर्दिष्ट क्रिया के प्रयोग से ही पूरे वाक्य के अर्थ का पता चल सकता है। जैसे,

काको जोमताना! 'वे नहीं खाते/खा रहें हैं।'

आलोकाको दुबका! 'वे न बैठें।'

उपर्युक्त वाक्यों में विकल्प से क्रिया निर्दिष्ट किया जा सकता है। जैसे,

(जोम) काकोआ:ताना! 'वे (खाने में) नहीं लगते = वे खाते नहीं।'

(दुब) आलोकाकोआ:का! 'वे बैठने के काम में न लगें = वे न बैठें।'

वाच्य:

जिस रचना व्यवस्था से कर्त्ता और कर्म का क्रिया के साथ के सम्बन्ध का बोध होता है उसे वाच्य कहते हैं। मुण्डारी में निम्नलिखित वाच्य होते हैं:-

1. सामान्य कतृ बोधक :

इस वाच्य में कर्त्ता प्रधान होता है। जैसे,

सेताए: निरताना! 'कुत्ता भाग रहा है।'

सादुइ: दुबाकाना! 'साधु बैठा है।'

दा: लिंगिताना! 'पानी बह रहा है।'

2. विशिष्ट कर्तृबोधक :

इस वाच्य में कर्त्ता के विशेष रूप से क्रिया करने का बोध होता है। यह क्रिया रूप दो प्रकार से व्यक्त किया जाता है।

(क) क्रिया की प्रथम मात्रा के द्विगुणीकरण से। जैसे,

जोजोम (< जोम) तानाए:। 'वह मन लगाकर खाता/खा रहा है।'

(ख) क्रिया के प्रथम स्वर के दीर्घीकरण से। जैसे, ऊपर के वाक्य को

जोजोमतानाए:

के रूप में प्रकट किया जा सकता है।

3. कर्मबोधक :

इस वाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। इस वाच्य में क्रिया अनिवार्य रूप से सकर्मक होती है। इस वाच्य का निर्माण

(क) वर्त्तमान और भविष्यत् काल में क्रिया के बाद 'ओ:' प्रत्यय जोड़कर और

(ख) भूतकाल में 'आकान', 'जान' और 'लेन' प्रत्यय जोड़कर होता है।
इस तरह,

चिटिओलो:ताना। 'चिट्ठी लिखी जा रही है।'
लोयोङ सीओगा। 'खेत जोता जाएगा।'
दारू मागाकाना। 'पेड़ काटा गया है।'
होड़ोए: लेललेना। 'आदमी देखा गया था।'
बाबा किरिंजाना। 'धान खरीदा गया।'

द्रष्टव्य :

(क) पूर्व पूर्णभूतकाल में 'आकान' के साथ 'ताइकेन' का व्यवहार सम्मत है। जैसे,

होड़ोको लेलाकान ताइकेना। 'लोग देखे गए थे।'

(ख) अनुभव संबंधी क्रियाओं के बाद भी 'ओ:' का प्रयोग होता है किन्तु अर्थ कर्तृवाचक ही होता है। यह भी द्रष्टव्य है कि 'ओ:' सहित और 'ओ:' रहित प्रयोगों में अर्थभेद होता है।
जैसे,

राबाङ तानाको। 'उन्हें ठंड लग रही है।'
राबाङो: तानाको। 'उन्हें ठंड लगने लगी है।'
लागा तानाए:। 'उसे थकावट महसूस हो रही है।'
लगाओ: तानाए:। 'उसे थकावट महसूस होने लगी है।'

(ग) सेन 'जाना' और हि: 'आना' क्रियाओं के वैकल्पिक प्रयोग सेनो: और हिजु: में भी अर्थ कृर्तवाचक ही होता है।
जैसे,

सेनो: तानाकिं। 'वे दोनों जा रहे हैं।'
हिजु: लेनाको। 'वे आये थे।'

न कि उनका अर्थ

* उन्हें जाया गया था।
* उन्हें आया गया था।

होगा।

4. परस्परता बोधक :

इस वाच्य में दो या उससे अधिक कर्त्ताओं के बीच परस्पर क्रिया होने का बोध होता है। वाच्य रूप का निर्माण क्रिया की प्रथम मात्रा के बाद–प–के अन्तरय से होता है।

जैसे,

लेपेलतानाकिं। 'वे दोनों एक दूसरे को देख रहे हैं।'

गोपोए:तानाको। 'वे (लोग) एक दूसरे को मार रहे हैं।'

द्रष्टव्य :

–प– अन्तरय जनित क्रिया शब्द कुछ अर्थ परिवर्तन के साथ विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे,

गोपोए: होड़ो 'झगड़ालू आदमी।'

ओपोम कुपुल 'दानी रिश्तेदार।'

5. कर्तृकर्मबोधक :

इस वाच्य में क्रिया के कर्म का प्रभाव कर्त्ता पर पड़ता है। अनिवार्य रूप से इस वाच्य में क्रिया सकर्मक होती है। इस वाच्य रूप का निर्माण

(क) व्यंजनान्त क्रियाओं के बाद – 'एन' जोड़कर और

(ख) स्वरान्त क्रियाओं के बाद – 'न' जोड़कर होता है।

उदाहरण,

लेलेन (< लेल) तानाए:। 'वह खुद को देख रहा है।'

मागेन (< मा:) तानाए:। 'वह खुद को काट रहा है।'

इतुन (< इतु) तानाम। 'तुम खुद को सिखा रहे हो।'

6. परार्थ बोधक :

इस वाच्य में क्रिया से किसी दूसरे के लिए कार्य किये जाने का बोध होता है। वाच्य रूप का निर्माण क्रिया के बाद 'आ' के जोड़ने से होता है। जैसे,

ओलाको (ओल + आ + को) तानाए:।
'वह उनके लिए लिख रहा है।'

कामिआञमे। 'मेरे लिए काम कर दो।'

द्रष्टव्य :

निम्नलिखित क्रियाएँ अधिकांशत: परार्थबोधक रूप में ही प्रयुक्त होती है :

सुकु 'पसन्द करना।'	उदुब 'बताना'
जोआर 'जोहार करना।'	चुण्डुल 'इशारा करना।'
गिउ: 'लाजाना'	काजि 'कहना'
बोरो 'डरना'	मेन 'कहना'
ओम 'देना'	खींस 'क्रोध आना'

देंगा 'मदद करना।'

क्रियापूरक आ:

किसी क्रिया की पूर्णता के लिए क्रिया रूप में काल प्रत्यय के बाद क्रिया पूरक 'आ' का होना अनिवार्य है। क्रियापूरक प्रत्यय विहीन रूप कर्त्ता/कर्म पद के विपर्यय से विशेषण पद होता है।

जैसे,

होड़ोको कामिताना (= कामि+तान+आ)। 'लोग काम कर रहे हैं।'

कामितान होड़ोको। 'काम करने वाले लोग।'

सादोम उयुगाकाना। 'घोड़ा गिरा हुआ है।'

उयुगाकान सादोम। 'गिरा हुआ घोड़ा।'

होड़ोको दारूको मा: जादा। 'लोग पेड़ काट रहे हैं।'

मा: जाद दारू। 'काटा जाता हुआ पेड़।'

द्रष्टव्य :

(क) मेना: 'होना' क्रिया और उसके नकारात्मक रूप बानो: 'न होना' क्रिया में अन्यपुरूष एक वचन और निर्जीव वाचक (वचन निरपेक्ष) संज्ञाओं के साथ विकल्प में क्रियापूरक 'आ' का लोप होता है। जैसे,

ओड़ा: रे चाउलि मेना: या मेनागा 'घर में चावल है।'

बानदारे दा: मेना: या मेनागा 'तलाब में पानी है।'

लातारे कुला बंगाइ: या बांगाइ:आ। 'खोह में बाघ नहीं है।'

उपिसरे सायोब बांगाइ: या बांगाइ:आ। 'आफिस में साहब नहीं है।'

कर्त्ता/ कर्ममेलक सार्वनामिक तत्त्व :

1. कर्त्ता मेलक तत्त्व :

मुण्डारी क्रिया रूप में कर्त्ता रूप संज्ञा या सर्वनाम से मेल खानेवाले सार्वनामिक तत्त्व का भी विकल्प से समावेश होता है।

जैसे,

आए: सेनो: ताना। 'वह जाता/ जा रहा है।'

आबु कामिकेना। 'हम काम करते थे।'

के विकल्प रूप क्रमश:

सेनो:तानाए: और 'कामिकेनाबु' भी हो सकता है।

2. कर्ममेलक तत्व :

(क) प्रधान कर्म : निर्जीव प्रधान कर्म के लिए भविष्यत् काल और विधि वाक्यों में वचन निरपेक्ष 'ए' का प्रयोग क्रिया के बाद होता है। जैसे,

चातोमकोले साबेआ। 'हम छाते पकड़ेंगे।'

चातोमले साबेआ। 'हम छाता पकड़ेंगे।'

किताब सालाएपे। 'किताब चुनो।'

किताबको सालाएपे। 'किताबें चुनों।'

शेष स्थितियों में कर्म को निर्जीवता प्रत्ययहीनता द्वारा दिखाई जाती है। जैसे,

दारूले मा:जादा। 'हम पेड़ काट रहे हैं।'

सांगाको उरजादा। 'वे कंद कोड़ रहे हैं।'

सजीव प्रधानकर्म के लिए तत्तत् सार्वनामिक मेलक तत्त्व क्रिया रूप के बाद प्रयुक्त होते हैं। जैसे,

आलेको इदिजाद लेआ। 'वे हमे ले जा रहें हैं।'

उरि:किंपे लेलताद किना? 'क्या तुमने बैलों को देखा है?'

कुपुलकोले रा:लेद कोआ। 'हमने मेहमानों को बुलाया था।'

(ख) गौणकर्म :

मुण्डारी में गौणकर्म सामान्यतया सजीव होता है और परार्थ बोधक वाच्य में प्रयुक्त होता है। परिणामत: सार्वनामिक मेलक तत्त्व परार्थबोधक वाच्य के बाद ही आते हैं। जैसे,

किताब को ओमाञताना। 'वे मुझे किताब दे रहे हैं।'

एना जागार उदुबाञमे। 'तुम मुझे वह बात बता दो।'

विशिष्ट क्रियाएं :

1. मेना: 'होना (स्थानबोधक)' :

इस क्रिया का प्रयोग सिर्फ वर्त्तमान काल में होता है। जैसे,

मुदु ओड़ा: रे मेना:इआ। 'मुदु घर में/पर है।'

होनकिं राँची रे मेना:किंङा। 'बच्चे राँची में हैं।'

किताब बाक्सारे रे मेनागा। 'किताब बक्से में हैं।'

द्रष्टव्य :

विकल्प से मेना: का लोप होता है। इस तरह ऊपर के वाक्यों के विकल्प रूप :

मुदु ओड़ा:रिआ

होनकिं राँचीरेकिङा।

किताब बाक्सारेआ।

2. तान 'होना (अस्तित्त्व बोधक)':

उपरोक्त 'मेना:' की तरह तान का प्रयोग सिर्फ वर्त्तमान काम तक ही सीमित है। जैसे,

मुदु पाणा तानि:।	'मुदु पुजारी है।'
निकु उरि: को तानको।	'ये बैल हैं।'
नेआ किताबताना:।	'यह किताब है।'

द्रष्टव्य:

लातार मुण्डारी में 'तान' की तरह नागपुरी से आगत 'हेके' का प्रयोग होता है। जैसे,

इनि: कुमबुडु हेके।	'वह चोर है।'
मुदु पाणा हेके।	'मुदु पुजारी है।'

भविष्यत् और भूतकाल में दोनों प्रकार (स्थानबोधक और अस्तित्त्व बोधक के 'होना' विचार तक 'रहना' क्रिया द्वारा प्रकट किए जाते हैं। जैसे,

(आको) ओड़ा:रेको ताइना।	'वे घर में/पर होंगे/ रहेंगे।'
(इनि:) सिपाई: ताइना।	'वह सिपाही होगा/ रहेगा।'
(आबु) राँचीरेबु ताइकेना।	'हम राँची में (रहे) थे।'
(आबु) राजाकोबु ताइकेना।	'हम (लोग राजा (रहे) थे।'

निषेध रूप :

'मेना:' का निषेध रूप सार्वनामिक मेलक तत्वों के पहले (अपेक्षित का 'मेना:' न होकर) 'बां' होता है। इसका प्रयोग सिर्फ वर्त्तमान काल तक ही सीमित है। जैसे,

आचि ताको राँची रे बांकोआ। 'आचि इत्यादि राँची में नहीं हैं।'

(आपे) ओड़ा:रे बांपेआ चि? '(तुमलोग) घर पर नहीं हो क्या?'

निर्जीव संज्ञाओं के लिए 'मेना:' का निषेध रूप 'बानो:' होता है।
जैसे,

ओड़ा:रे बुलुं बानो:आ।	'घर पर नमक नहीं है।'
बिररे दारू बानो:आ।	'जंगल में पेड़ नहीं हैं।'

द्रष्टव्य :

(क) 'बानो:' के बाद क्रिया रूप 'आ' का विकल्प से लोप होता है। जैसे उपरोक्त उदाहरण का विकल्प रूप 'ओड़ा:रे बुलुं बानो:' भी है।

(ख) मेना:, बां और तान क्रियाओं के बाद (जैसा कि संकेत वाचक सर्वनामों के बाद

भी होता है) अन्य पुरूष एक वचन का रूप 'इ:' होता है। विकल्प से 'इ:' और उत्तम पुरुष एक वचन 'ञ' के पहले और 'बां' के बाद 'आ:' का आगम होता है। जैसे,

इनि: ओड़ा:रे मेना:इ (= मेनाइ:)। 'वह घर में है।'

इनि: सादु तानि:। 'वह साधु है।'

माकु ओड़ा: रे / बांगा:इ(आ)/ बांगा:इ (आ)। 'माकु घर में नहीं है।'

आञ ओड़ा:रे / बांगा:ञा/बांगिञा। 'मैं घर में नहीं हूँ।'

'तान' का निषेध रूप नियमित रूप से ही 'का' के पूर्व स्थापन द्वारा होता है। जैसे,

आले पाणाको का तानले। 'हम पुजारी नहीं हैं।'

आपे कुमबुडुको का तानपे। 'तुम (लोग) चोर नहीं हो।'

3. सेन/सेनो: 'जाना'

वर्त्तमानकाल में 'तान' प्रत्यय के पहले और भविष्यत्काल में 'सेन' (और इसके कर्मवाचक रूप सेनो:) का विकल्प से लोप होता है।

जैसे,

राँचीतेञ सेनो:ताना या राँची तिञ ताना। 'मैं राँची जा रहा हूँ।'

राँचीतेञ सेनोगा या राँचीतिञा। 'मैं राँची जाऊँगा।'

संबोधी क्रियाएँ :

मुण्डारी में कुछ ऐसी क्रियाएं हैं जिनका प्रयोग सिर्फ संबोधन के अर्थ में होता है। इनके दो प्रकार हैं : विधि संबोधी और निषेध संबोधी।

विधि संबोधी क्रियाएँ :

1. मार 'चलो/चलिए (चलने के अर्थ में नहीं)!, सावधान! ठीक है।' जैसे

मार पाड़ाओएमे! 'चलो उसे पढ़ो!'

मारेञ आयुमजादमेआ! 'ठीक है, मैं तुम्हें सुन रहा हूँ।'

मारे: निरताना 'सावधान वह भाग रहा है।'

द्रष्टव्य :

(क) मेहमानों को संबोधित करते हुए मार का प्रयोग 'कृपाया' के अर्थ में होता है। जैसे,

मार दुबपे। 'कृपाया आपलोग बैठें।'

मार हिजु:में। 'कृपाया आइए।'

(ख) विकल्प के रूप में लातार मुण्डारी में लेगे और चेतान मुण्डारी में लाए का प्रयोग होता है। जैसे,

लाए काजीमे। 'ठीक है, कहो।'

2. एला 'आओ/आइए।'

एला लाङ जागारकोःआ। 'आओ, हम (दोनों) बात कर लें।'

एलाञ नाकिःतामा। 'आओ, मैं तुम्हारे बाल संवार दूँ।'

एलाम तायोमोःताना! 'आओ, पीछे पड़ रहे हो।'

द्रष्टव्य :

कभी-कभी आश्यर्च प्रकट करने के लिए भी 'एलाआ' का प्रयोग होता है। जैसे,

एलाआ, चिमताङेम तेबाःलाः? 'ओ, तुम कब पहुँचे?'

एलाआ, नामिनाङेः हाराजाना! 'ओ, वह इतना बढ़ गया।'

3. दोला '(साथ) चलो/चलिए!'

दोलाबु पीटितेबु (सेन) आ! 'चलो, हम बाजार चलें।'

दोलाञ एसेकारोः ताना! '(साथ) चलो, मैं अकेला पड़ रहा हूँ।'

4. तेर '(अपेक्षाकृत दूर से) लो!' देखो (देखने के अर्थ में नहीं)!' सावधान!

तेर, दिरि उयुगोःतानाः! 'देखना, पत्थर गिर रहा है।'

तेर, उरिःञ आड़ाः जाः इआ! 'सावधान, मैं बैल (को) छोड़ रहा हूँ।'

द्रष्टव्य :

कभी-कभी 'तेर' (तोबे) का प्रयोग आकांक्षा के अर्थ में भी होता है।

तेर तोबेः बुगिओःका! 'दैव, वह अच्छा हो जाए।'

तेर तोबेञ दाड़िका! 'दैव, मैं जीत जाऊँ।'

5. आते/एते 'सुनते हो! ए!, हे!'

आते सोमा, होला दो ओकोरेम ताइकेना? 'ए, सोमा, तुम कल कहाँ थे?'

आते बिसु, एन होड़ो दो ओकोरेनिः तानिः? हे बिसु, वह आदमी कहाँ का है!

आतिः/इतिः ओकोए हिजुःताना! 'सुनते हो? कोई आ रहा है?'

आते/एतेः चिकानाः उयुःजाना। 'सुनते हो कौन सी चीज गिर गई!'

6. जू 'जाओ/जाइए!'

'जू' लेल आउ ली (ले+इ) मे! 'जाओ, उसे देख आओ।'

जू सेनोःबेन! जाओ, तुम (दोनों) जाओ।

द्रष्टव्य :

जू का प्रयोग सौगंध के अर्थ में भी होता है।

जू होसोड़ोम जागारतान रेदो.....। 'सौगंध है, अगर तुम झूठ बोल रहे होतो....'

7. दे/दा/दो/दीजिए, बताओ!'

दे, टाका ओमाञ मे।	'दो, रूपया दो।'
दे, होरा आड़ागाञ मे।	'दो, रास्ता छोड़ दो।'
दे, पे बुगिगेआचि?	'कहो, अच्छे हो न?'

8. ने 'लो/लीजिए!'

ने, होन हेबेली मे!	'लो, बच्चे को गोद में लो!'
ने, जोमलेम।	'लो खा लो!'
ने, एनाङातेम लेलताना।	'लो, तभी से देख रहे हो!'

9. ओचो/'हटो, घसको!'

'ओचो, पारकान मे।	'हटो, दूर हटो।'
ओचोम टोगाकान गेआ।	'हटो, लग जाओगे।'

द्रष्टव्य :

लातार मुण्डारी में विकल्प से 'दिर' का प्रयोग होता है।

दिर,गाड़ी हिजु:ताना.	'हटो, गाड़ी आ रही है।'

10. दुकुञ 'देखूं'

दुकुञ सेनकोआ:।	'देखूं, जा आऊं।'
दुकुञ कामितिञा।	'देखूं, काम पर जाऊँ।'

द्रष्टव्य :

इसका प्रयोग सिर्फ उत्तम पुरूष पु. एकवचन (ञ) तक ही सीमित है।

निषेध संबोधी क्रियाएँ:

1. आलो 'ना....! नहीं....! देखोगे!'

आलो, ओणाकानगेआ!	'ना, बिगड़ जाएगा।'
आलो, आपुमेञ उदुबलीका।	'देखोगे, मुझे तुम्हारे बापको बताने दो।'

द्रष्टव्य :

'आलो' का प्रयोग गनीमत के अर्थ में भी होता है। जैसे,

आलो राजा होन मेनतेको बागेकि:आ। 'गनीमत थी कि राजकुमार समझकर लोगों ने उसे छोड़ दिया।'

2. आउरि/हाँ ठहरो! रूको!

आउरिञ नाकिगेनताना! 'ठहरो, मैं बाल बना रहा हूँ!'

आउरि, तांगिलीपे! 'रूको, उसकी प्रतीक्षा करो।'

द्रष्टव्य :

'हों' का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से भी किसी क्रिया को कुछ समय के लिए पूरी तरह बन्द करने के लिए किया जाता है। जैसे, किसी काम में लगे व्यक्ति या व्यक्ति समूह का ध्यान आकार्षित करने के लिए 'हों' का अर्थ होगा 'जरा काम बन्द कीजिए।'

संयुक्त क्रिया :

एक से अधिक क्रियाएँ जब एक साथ प्रयुक्त होती है तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं। ऐसी क्रियाओं में क्रिया प्रत्यय अंतिम क्रिया के साथ लगते हैं। मुण्डारी में तीन प्रकार की संयुक्त क्रियाएँ होती हैं।

1. स्वतंत्र संयुक्त क्रिया :

इस प्रकार की संयुक्त क्रिया में दोनों क्रियाएँ स्वतंत्र रूप में भी व्यवहार्य होती है। उदाहरण,

जोम इदि 'खाते जाना' (< खाना + जाना)
लेल बाइ 'ठीक से देखना' (< देखना + बनाना)
साबजापा: 'मजबूती से पकड़ना' (< पकड़ना + नजदीक आना)
ओम कुल 'दे भेजना' (< देना + भेजना)
जोमबागे 'खा छोड़ना' (< खाना + छोड़ना)
टोटेएतेल 'शर संधान करना' (< तीर मारना + निशाना लगाना)
लेल आउ 'देख आना' (< देखना + आना)
जोमलेका 'खा देखना' (< खाना + गिनना)
दाणानाम 'खोजपाना' (< खोजना + पाना)
लेल उरूम 'देख पहचानना' (< देखना + पहचानना)
साब दाड़ि 'पकड़ सकना' (< पकड़ना + सकना)
कामिजोम 'अपने लिए काम करना' (< काम करना, खाना)
चाउलि ओमकुलाकोपे। 'उन्हें चावल दे भेजो।'
इनि:ञ लेलाउ लीआ। 'उसे देख आऊँगा।'
उलि जोमलेकामे। 'आम खाकर देखो।' इत्यादि।

2. संबद्ध संयुक्त क्रिया :

इस प्रकार की संयुक्त क्रिया में द्वितीय क्रिया स्वतंत्र रूप से व्यवहार्य नहीं होती। जैसे,

क्रिया+गारं 'ठीक से क्रिया करना/होना'

क्रिया+तुका 'क्रिया कर आना'

क्रिया+तोरसा/तोर 'क्रिया करते जाना।'

क्रिया+काते 'बार-बार क्रिया करना/होना।'

क्रिया+इचि 'क्रिया करने/होने देना।'

क्रिया+नो: 'थोड़े समय के लिए क्रिया करना/होना।'

क्रिया+चोटे: 'थोड़े (नो: से भी कम) सम्पर्क लिए क्रिया करना/होना'

क्रिया+कुचा 'खूब क्रिया करना/होना'

क्रिया+उतार 'सदा के लिए क्रिया करना/होना'

क्रिया+ताब 'जल्दी से क्रिया करना/होना'

क्रिया+हानताड़ा 'पहले से क्रिया करना/होना'

जोम गाराङ ताबेन 'ठीक से खाए रहो।'

ओल काते लेरे आदार बाइओ:आ 'बार-बार लिखने से अक्षर बनते हैं।'

कुमबुडु को दालकुचा कि:आ 'लोगों ने चोर को खूब पीटा।'

सेनो: हानताड़ाबेन। 'तुम दोनों जाते रहो।' इत्यादि।

3. विशिष्ट संयुक्त क्रिया :

इस संयुक्त क्रिया में अंतिम क्रिया अपना सामान्य अर्थ छोड़कर एक विशिष्ट (अपमानजनक) अर्थ ग्रहण करती है। ऐसी संयुक्त क्रियाओं में दूसरी क्रिया सामान्य वार्तालाप में अकथ्य होती है।

जैसे,

साबसुटि: 'धरपकड़ करना' (< पकड़ना+अंगुलियाना)

ओम डुकि 'कोई चीज देकर चलता करना' (< देना+पेशाब करना)

दाल देड़े 'बुरी तरह मारना' (< मारना+चोदना)

दालदेड़ीपे 'मारो, साले को।'

ओम डुकिआइपे: सेनो:का। 'देदो, चला जाए।'

4. आवृत्त संयुक्त क्रिया :

इस प्रकार की संयुक्त क्रिया में एक ही क्रिया आवृत्त होती है। सामान्यतया इसका अर्थ 'थोड़ी देर के लिए क्रिया करना' होता है।

उदाहरण,

कामिकामि केनाए: 'उसने थोड़ी देर तक काम किया था।'

जोम जोम को:मे। 'थोड़ी देर के लिए खाओ'

प्रेरणार्थक क्रिया :

किसी दूसरे से क्रिया कराना प्रेरणार्थक क्रिया कहलाता है। मुण्डारी में प्रेरणार्थक क्रिया रूप संयुक्त क्रिया द्वारा व्यक्त किया जाता है। इस संयुक्त क्रिया की द्वितीय क्रिया इरि। इचि या रिका/ इका 'करने देना' होती है। मुण्डारी में दोनों (सकर्मक और अकर्मक) प्रकार की क्रियाओं से प्रेरणार्थक रूप बनते हैं। जैसे,

ओल इचि/रिका, ओल रिका/इका 'लिखने देना/लिखाना/लिखवाना।'
दुब इचि/ इरि,दुबरिका/ इका 'बैठने देना/ बैठाना/बैठवाना।'
चिटि ओलरिकाइपे। 'तुमलोग उसे पत्र लिखवाओ।'
रूआतानको रानुजोम रिकाकोम। 'तुम मरीजों को दवा खिलाओ।'
कुपुलकिं पारकोमरे दुबरिकाकिंमे। '(दो) मेहमानों को चारपाई पर बैठाओ।'
होने:दुडुम रिकाइका। 'वह बच्चे को सोने दे।' इत्यादि।

द्रष्टव्य :

(क) इचि/इरि और रिका/इका का भेद भौगोलिक है। इचि/इरि का प्रयोग लातार मुण्डारी में और रिका/इका का प्रयोग ताला मुण्डारी और चेतान मुण्डारी में होता है।
(ख) शाब्दिक स्तर पर कुछ शब्दों में प्रेरणार्थक क्रिया रूप आ उपसर्ग द्वारा प्रकट किया जाता है। जैसे,

नु 'पीना'	आनु 'पिलाना'
जोम 'खाना'	आजोम 'खिलाना'
जाल 'चाटना'	आजाल 'चटाना'

पूर्वकालिक क्रिया :

मुण्डारी में पूर्वकालिक क्रिया का निर्माण तीन प्रकार से होता है।

1. सकर्मक क्रियाओं के साथ आस्पद चिन्हों 'ले' या 'के' के बाद 'आते', के प्रत्ययीकरण द्वारा। जैसे,

जोम लेआते/केआते 'खाकर/खाने के बाद'
ओल लेआते/केआते 'लिखकर/लिखने के बाद'

2. अकर्मक क्रियाओं के साथ आस्पद चिन्ह 'को:' के बाद 'आते' के प्रत्ययीकरण द्वारा। जैसे,

दुबको:आते 'बैठकर/बैठने के बाद'
गिति: को:आते 'सोकर/सोने के बाद'

3. दोनों ही प्रकार की क्रियाओं के बाद काल प्रत्यय 'केन' के बाद 'आते' के प्रत्ययीकरण द्वारा। जैसे, ऊपर के उदाहरणों के परिवर्तित रूप,

जोमकेनचि 'खाकर/खाने के बाद'

ओलकेनचि 'लिखकर/लिखने के बाद'

दुबकेनचि 'बैठकर/बैठने के बाद।'

गिति:केनचि 'सोकर/सोने के बाद'

उपरोक्त प्रकार की पूर्वकालिक क्रियाओं में क्रिया का केन्द्र कर्त्ता होता है जैसा कि हमने काल प्रकरण में उल्लेख किया है।

द्रष्टव्य :

(क) विकल्प से सकर्मक क्रियाओं के बाद केदचि/लेदचि और अकर्मक क्रियाओं के बाद को:चि/केनचि जोड़कर भी पूर्वकालिक क्रिया का निर्माण होता है। जैसे, ऊपर के उदाहरणों के विकल्प रूप,

जोम लेदचि/केदचि 'खाकर/खाने के बाद'

ओल लेदचि केदचि 'लिखकर/लिखने के बाद'

दुबको:चि/केनचि 'बैठकर/बैठने के बाद'

गिति:को:चि/केनचि 'सोकर /सोने के बाद'

(ख) सभी प्रकार की पूर्वकालिक क्रियाओं का प्रयोग वाक्य में क्रिया विशेषण की तरह होता है। जैसे,

माण्डि जोमकेआते पाड़ाओ सेनो:मे 'खाना खाने के बाद पढ़ने जाओ'

दुबको:आते: मेनकेदा। 'उसने बैठकर कहा :'

8. प्रत्यय खण्ड

कारक प्रत्यय

स्वतंत्र कारक प्रत्यय :

1. कर्म बोधक :

(क) के 'को'

उदाहरण,

इनि: के काजिआइपे। 'उसे कहो।'

सांदु बुदु के: लेल लि:आ। 'सांदु ने बुदु को देखा था।'

द्रष्टव्य :

के नागपुरी से आगत प्रत्यय है और इसलिए इसका प्रयोग 'चेतान' और 'लातार' मुण्डारी में ही अधिक होता है क्योंकि मुण्डारी की ये बोलियाँ नागपुरी के संपर्क में है।

(ख) ते 'को/पर'

उदाहरण,

राँचीतेको सेनो:ताना। 'वे राँची (को) जा रहे हैं।'

बुरूते: राकाब जाना। 'वह पहाड़ पर चढ़ गया।'

2. करण बोधक :

ते 'से' :

उदाहरण,

हाके ते: मा: जादा। 'वह टांगी से काट रहा है।'

साइकाल तेको हिजु:लेना। 'वे साइकिल से आए थे।'

सुकुतेबु ताइनताना। 'हम सुख से रहते हैं।'

माणितेम जागारताना। 'तुम धीरे से बात कर रहे हो।'

ओड़ा: बुसु: ते दाबाकाना। 'घर पुआल से छाया हुआ है।'

किचिरि बारटाका तेको किरिंला:। 'उन्होंने कपड़ा दो रूपये से खरीदा था।'

3. सम्प्रदान बोधक:

नागेन 'के लिए'

उदाहरण,

आले नांगेन नायाल बाइतापे। 'हमारे लिए हल बना दो।'

बारसिं नांगेने: हिजु:लेना. 'वह दो दिन के लिए आया था।'

नेआ नांगेनेम काजिकेना। 'क्या तुम इसके लिए कहते थे।'

द्रष्टव्य :

चेतान मुण्डारी में विकल्प से 'लाइ' का प्रयोग होता है। जैसे,

आले लाइ बुलुङ किरिं आउजाम। 'हमारे लिए नमक खरीदते आना।'

4. आपादान बोधक :

आते 'से'

उदाहरण,

कुड़िहोन दारूआते: उयु:जाना। 'बच्ची पेड़ से गिर गई।'

राँची आते पटना चिमिन सांगिना ? 'राँची से पटना कितनी दूर है?'

आञाते आए: माराङा। 'वह मुझसे बड़ा है।'

डाड़िआते दा: आगुलेम। 'डाड़ी से पानी ला लो।'

गापाआतेले कामिआ। 'हम कल से काम करेंगे।'

द्रष्टव्य :

चेतान मुण्डारी में आते के बदले 'एते' का प्रयोग होता है जैसे,

खुंटिआतेञ हिजु:ताना। 'मैं खूँटी से आ रहा हूँ।'

होलाएतेले दुबाकाना। 'हम कल से बैठे हुए हैं।'

5. संबंध बोधक :

(क) आ: 'का'

उदाहरण,

नेआ आलेआ: ओड़ा:ताना:। 'यह हमारा घर है।'

माकुआ: उरि: निरताना। 'माकु का बैल भाग रहा है।'

आपुमा: चादलोम। 'तुम्हारे बाप की पूंछ!' (मजाक में)

द्रष्टव्य :

(अ) पुरुषवाचक सर्वनामों के साथ किसी संज्ञा का अपेक्षाकृत घना संबंध संबंधित संज्ञा और सार्वनामिक तत्व के बीच 'ता' के अन्तराय द्वारा दिखाया जाता है।

उदाहरण,

किताब ताञ 'मेरी अपनी किताब/ प्यारी किताब।'

होन ताम 'तुम्हारा अपना बच्चा/ प्यारा बच्चा।'

ओड़ा: ताले 'हमारा अपना घर/ प्यारा घर।'

कुपुलको ताबु 'हमारे सम्मान्य मेहमान।'

(ब) पारिवारिक/कौटुंबिक सम्बन्ध शब्दों के बाद पुरुषवाचक सार्वनामिक तत्त्वों 'ञ', 'म' और अन्यपुरुष एक वचन के लिए 'ते' के प्रत्ययीकरण द्वारा भी एक विशेष सम्बन्ध व्यक्त किया जाता है।

उदाहरण,

आपुञ	'मेरे पिता'
आराम	'तुम्हारा दामाद'
हिलिते	'उसकी भाभी'

द्रष्टव्य :

व्यंजनान्त शब्दों के बाद 'ञ' के बाद 'इ' का आगम होता है और 'म' के बाद

'ए' का।

उदाहरण,

होनिञ कोड़ा	'मेरा बेटा'
किमिनिञ	'मेरी बहु।'
होनमे कोड़ा	'तुम्हारा बेटा।'
किमिनमे	'तुम्हारी बहु।'

(ख) लो: 'के साथ'

उदाहरण,

आञ लो: दुबमे। 'मेरे साथ बैठो।'

दा:लो: सुनुम का जामाओ:आ। 'पानी के साथ तेल नहीं मिलेगा।'

दाड़ि लो: कामि लागातिङा। 'सामर्थ्य के साथ काम करना चाहिए।'

आङो: लो: राँची ले तेबा:एआ। 'बिहान होने के साथ/होते ही हम राँची पहुँचेंगे।'

(ग) साम 'के साथ/सहित'

अंग-अंगीकृत का सम्बन्ध दिखाने के लिए इस प्रत्यय का प्रयोग होता है।

उदाहरण,

दारू रेएदसाम तुदआउलेम। 'पेड़ जड़ सहित उखाड़ लाओ।'

नागु लोसोदसाम पीटिते: सेनो: जाना। 'नागु कीचड़ सहित बाजार चला गया।'

उलि पाटा सामे: जोमकेदा। 'उसने आम गुठली सहित खा लिया।'

द्रष्टव्य :

विकल्प से 'साम' का प्रयोग उपसर्ग के रूप में इसी अर्थ में किया जाता है। इस तरह से ऊपर के उदाहरणों में प्रयुक्त रेएदसाम 'जड़ सहित' लोसोदसाम 'कीचड़ सहित' और पाटासाम 'गुठली सहित' के वैकल्पिक रूप 'सामरेएद' 'सामलोसोद' 'सामपाटा' होंगे।

(घ) बेगार 'के बिना' :

उदाहरण,

आम बेगार ने कामि का होबाओ:आ। 'तुम्हारे बिना यह काम नहीं होगा।'

दा: बेगारे: गोए: जाना। 'पानी के बिना वह मर गया।'

बुलुङ बेगार उतु का सिबिला। 'नमक के बिना तरकारी स्वादिष्ट नहीं होती।'

(6.) अधिकरण बोधक

(क) रे 'में, पर'

उदाहरण,

ओड़ा: रे मेना:लेआ। 'हम घर पर/में हैं।'

चेणे दारूरे: दुबाकाना। 'चिड़िया पेड़ पर बैठी हुई है।'

मोणे सिरमा रेञ हिजुगा। 'पाँच वर्ष में आऊँगा।'

एनकारे गांगु काए: जागारा। 'ऐसा करने पर गांगु बात नहीं केरेगा।'

(ख) जाकेद/ हामि:/ हाबि: 'तक' (अधिकरण बोधक) :

उदाहरण,

राँची जाकेद इदि तुकाञ पे। 'मुझे राँची तक पहुँचा दो।'

दिल्ली हामि: रेआ: चिमिनाङ भाड़ा? 'दिल्ली तक का किराया कितना?'

द्रष्टव्य :

'जाकेद' का प्रयोग बलाघानक प्रत्यय के रूप में भी होता है। इस अर्थ में यह राटि 'तक' की तरह प्रयुक्त होता है।

उदाहरण,

माण्डि जाकेद काए: जोओमजाना। 'उसने खाना तक नहीं खाया।'

आञा: नुतुम जाकेद को रिड़िङकेदा। 'वे मेरा नाम तक भूल गए।'

(ग) ता: 'के पास' :

उदाहरण,

आञता:(रे) टाका बानो:। 'मेरे पास रुपया नहीं है।'

आपेता: (ते) ले सेनो: ताना। 'हम तुम्हारे पास जा रहे हैं।'

(घ)सा: 'की तरफ' :

उदाहरण,

आले सा: राबाङताना। 'हमारी तरफ ठण्ड पड़ रही है।'

ओको सा: को हासुजादमेआ? 'किस तरफ दर्द कर रहा है?'

हानसा: बुगिना। 'उधर अच्छा है।'

द्रष्टव्य :

चेतान मुण्डारी में 'सा:' के बदले 'पाड़ा' का प्रयोग होता है। जैसे,

आञ पाड़ा हिजु:मे। 'मेरी ओर आओ।'

संयुक्त प्रत्यय :

उपर्युक्त स्वतन्त्र प्रत्ययों के संयुक्त रूप भी होते हैं जिनमें सामान्य तया द्वितीय प्रत्यय

प्रधान होता है।

1. कर्मबोधक

(क) सा:ते 'की तरफ (को)'

उदाहरण,

बुदु ओको सा: ते:सेनो:जाना। 'बुदु किस तरफ/किधर चला गया?'
आले सा:ते हजि:पे। 'हमारी तरफ आओ।'
नेसा: तेबु सेनो:आ। 'हम इधर जाएँगे।'

(ख) ता:ते 'के पास/यहाँ (को)'

आमता:तेञ सेना। 'मैं तुम्हारे पास जाऊँगा।'
इनि: ता: ते आलोपे इदीआ। 'उसके पास न ले जाओ।'

2. कारणबोधक :

(क) लो: ते 'के साथ'

उदाहरण,

आमलो: ते निरगे सानाञा। 'मुझे तुम्हारे साथ भाग जाने का मन करता।'
आपेलो:ते: सेनो:का। 'वह तुम्हारे साथ जाए।'

(ख) लो: रे 'के साथ होने पर'

उदाहरण,

आम लो:रे काञ बोरोएआ। 'तुम्हारे साथ रहने पर मुझे डर नहीं लगता है।'
जोजो लो:रे हाइको सिबिला। 'इमली के साथ मछली स्वादिष्ट होती है।'

3. सम्प्रदान बोधक :

आ: नांगेन 'के लिए'

उदाहरण,

ओकोएआ: नांगेनपे आउआकादा? 'किसके लिए लाए हो?'
माकुआ: नांगेन कोनेआले दाणाताना। 'हम माकु के लिए कन्या ढूँढ़ रहे हैं।'

4. आपादान बोधक :

(क) ता:आते 'के पास/यहाँ से'

उदाहरण,

आम तागाते टाका को नामेआ। 'वे तुमसे (तुम्हारे यहाँ से) रूपया पाएँगे।'
नेतागाते हेनता:ञ सेना। 'मैं यहाँ से वहाँ जाऊँगा।'

(ख) सा: आते 'की तरफ से'

उदाहरण,

देआ सा:आतेको साब कि:आ। 'उन्होंने उसे पीछे की ओर से पकड़ा।'

कुमा को सागते जेताए काको ताइकेना। 'मामाओं की ओर से कोई नहीं था।'

5. सम्बन्ध बोधक :

(क) रेआ: 'का'

उदाहरण,

दिरि रेआ: ओड़ा: बु बाईआ। 'हम पत्थर का मकान बनाएँगे।'

ने मादरेआ: चातोम का बाइओ:आ। 'इस बाँस का छाता नहीं बनेगा।'

(ख) तेआ: 'का'

उदाहरण,

बाबा दो तेआ: जेताओ: बानो:। 'धान रखने का कुछ भी नहीं है।'

ने पुडु: दो इलि नू तेआ:। 'यह दोना इलि पीने का है।'

6. अधिकरण बोधक :

(क) ता: रे 'के पास (में)'

उदाहरण,

एनता: रे होड़ो दुबाकाना। 'वहाँ (= उस जगह के पास) लोग बैठे हुए हैं।'

आकोता:रे रानु नामो:आ। 'उनके यहाँ दवा मिलेगी।'

(ख) सा:रे 'की ओर (में)'

उदाहरण,

आले सा:रे साआन बानो:। 'हमारी ओर लकड़ी नहीं है।'

आञा: लेंगा सा: रे दुबमे। 'मेरी बाईं ओर बैठो।'

बलाघानक प्रत्यय

मुण्डारी में निम्नलिखित प्रत्ययों से पूर्वागत शब्दों पर बलाघान दिया जाता है।

1. गे 'ही'

उदाहरण,

आमगे हिजु: को:मे। 'तुम ही आ लो।'

काजिगे काए: मानातिङा। 'वह बात ही नहीं मानता है।'

एनरेगेपे ताइकेनाचि? 'क्या तुम वहीं थे?'

2. बाआरि 'ही'

उदाहरण,

आञ बाआरि सेनो:आ। 'सिर्फ मैं ही जाऊँगा।'

एना बाआरि इदीमे। 'सिर्फ उसे ही ले जाओ।'

नेता: बाआरि: गामाला:। 'सिर्फ यही पानी बरसा था।'

द्रष्टव्य :

'गे' और बाआरि के प्रयोग में अन्तर यह है कि 'गे' से 'किसी के बदले का ही' का अर्थ निकलता है तो बाआरि से 'सिर्फ का ही' का अर्थ।

3. दो 'तो'

उदाहरण,

आञ दो काञ सेना। 'मैं तो नहीं जाऊँगा।'

कामि दो ताइकेना। 'काम तो था।'

राँची रेदो बांकोआ। 'वे राँची में नहीं हैं।'

4. राटि/जाकेद 'तक'

उदाहरण,

माण्डि राटि काए: जोओमजाना। 'उसने भात तक नहीं खाया।'

आपान हातु राटिम बागे केदा। 'तुमने अपना गांव तक छोड़ दिया।'

जागर राटि काको जागार ताना। 'वे बात तक नहीं करते।'

5. ओ 'भी'

उदाहरण,

आमो हिजु: में। 'तुम भी आओ।'

कामिओ बानो:आ। 'काम भी नहीं है।'

सोमाओ चिपे इदिजा:इआ। 'क्या तुम सोमा को भी ले जा रहे हो?'

6. एनं 'केवल/ही'

उदाहरण,

आए: एनं ने कामि: दाड़िआ:। 'केवल वही यह काम कर सकेगा।'

एनता:रे एनं रानु नामो:आ। 'केवल वहीं दवा मिलेगी।'

मोटोरते सेनको: एनं तेबागो:आ। 'मोटर गाड़ी से जाने पर ही वहां पहुँचा जा सकेगा।'

7. दां/ दारां/ देरां 'निश्चय रूप से'

उदाहरण,

इनि: दो मंगु दां ताइकेना। 'वह तो निश्चित रूप मे मंगु था।'

आम दां सेनोः लागातिङा। 'निश्चित रूप से तुम्हें जाना चाहिए।'

जागारो दां काएः पातिआः। 'वह बात भी नहीं मानता है।'

8. बातिः/ बातिकाम/ बादकाम 'के बदले निश्चित रूप से।'

उदाहरण,

माण्डि दो काञाः, इलि बादकामेञ नूइआ।

'भात नहीं खाऊँगा, बदले में इलि अवश्य पीऊँगा।'

9. चा 'ही/न'

उदाहरण,

आएः चा ताइकेना। 'तुम्हें पता नहीं है? वही था।'

एना चाञ काजिताना। 'मैं वही न कह रहा हूँ।'

10. ड़ोः 'और'

उपर्युक्त प्रत्ययों के अतिरिक्त बलाघान के लिए ओड़ोः 'और' का संक्षिप्त रूप ड़ोः का संयुक्त प्रयोग होता है।

उदाहरण,

एना काजिदोड़ोः आलोपे रिड़िङेआ। 'और वह बात तो न भूलना।'

आमगेड़ोः काजिआइमे। 'और तुम्हीं उसे कहना।'

आएः ओड़ोः बु इदीआ। 'और हम उसे भी ले जाएँगे।'

9. समास खण्ड

दो या उससे अधिक शब्दों का मिलकर एक पदी हो जाना समास कहलाता है। मुण्डारी में निम्नलिखित प्रकार के समास होते हैं।

1. तत्पुरुष समास–

इस समास में दोनों पद संज्ञा होते हैं और दूसरा पद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास कारक प्रत्ययों के लोप से बनते हैं। इस तरह,

(क) कर्म तत्पुरुष :

कोनेआ किचिरि (= कोनेआ ओमाइ किचिरि)

'कन्यावस्त्र' (= कन्या को दिया जानेवाला वस्त्र)

मुचिजुता (= मुचि बाइआकादजुता)

'मोचीजूता' (= जूता जिसे मोची ने बनाया है।)

कुपुल रिणि (= कुपुलको ओमाको रिणि)

'कुटुम्ब ऋण' (= कुटुम्बों को दिया जाने वाला ऋण)

(ख) करण तत्पुरुष :

मादचातोम (= मादते बाइआकान चातोम)

'बाँस छाता' (= बाँस से बनाया हुआ छाता)

दिरिओड़ा: (= दिरिते बाइआकान ओड़ा:)

'प्रस्तर भवन' (= पत्थर से बना हुआ मकान)

लुमाम किचिरि (= लुमामते बाइआकान किचिरि)

'रेशम कपड़ा' (= रेशमी सूत से बना हुआ कपड़ा)

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष :

आड़ांदि चाउलि (= आड़ांदि नांगेन रूडुङाकान चाउलि)

'विवाह चावल' (= विवाह के लिए कूटा हुआ चावल)

बा इलि (= बा हुलाङ नूइ नांगेन आकिदाकान इलि)

'सरहुल इलि' (= सरहुल के दिन पीने के लिए उठाया हुआ इलि)

दाणेमेरोम (= दाणेइ नांगेन तोलाकान मेरोम)

'बलिबकरा' (= बलि के लिए बंधा हुआ बकरा)

(घ) अपादान तत्पुरुष :

सिरमादा: (= सिरमाते उयु:तानदा:)

'आकाश जल' (=आकाश से गिरने वाला जल)

बुरुगाड़ा (= बुरुआते हिजु: तानगाड़ा)

'पहाड़ नदी' (= पहाड़ से आने वाली नदी)

राँची गाड़ी (= राँची आते हिजु: गाड़ी)

'राँचीगाड़ी' (=राँची से आने वाली गाड़ी)

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष:

सिमकाटा (=सिमा: काटा) 'मुर्गी टाँग' (=मुर्गी की टाँग)

राजाहोन (=राजा: होन) 'राजपुत्र' (= राजा का पुत्र)

मुण्डादासि (=मुण्डाकोआ: दासि) 'मुण्डा चरवाहा' (=मुण्डा का चरवाहा)

(च) अधिकरण तत्पुरुष :

बुरूबांदा (= बुरुरे मेना: बांदा)

'पहाड़ी तालाब' (= पहाड़ पर स्थित तालाब)

सांगिनदिसुम (=सांगिन रे मेना: दिसुम)

'दूरदेश' (=दूर स्थित देश)

दारु चोके (= दारू रे ताइन चोके)

'वृक्ष मेंढक' (= वृक्ष में रहने वाला मेंढक)

2. कर्मधारय समास :

जिस समास में प्रथम शब्द विशेषण हो और दूसरा शब्द संज्ञा (विशेष्य) हो या जिनमें उपमा उपमेय का सम्बन्ध हो। तत्पुरुष की ही तरह इस समास में भी दूसरा पद प्रधान होता है।

उदाहरण,

पोण्डे दा; (= पोण्डे गे मेना: दा:)

'गन्दापानी' (= जो पानी गन्दा है)

मिरूमोचा (= मिरूलेका मोचातेन)

'सुग्गामुख' (=सुग्गे की तरह मुख वाला)

आदिङनिदा (आदिङ लेकहेनदे निदा)

'आदिं रात' (=आदिं की तरह काली रात)

3. द्वन्द समास :

इस समास में दोनों पद संज्ञा होते हैं और दोनों ही प्रधान होते हैं। इस समास की मुख्य पहचान है शब्दों के बीच के ओड़ो: 'और' शब्द का लोप।

उदाहरण,

हातुदिसुम (= हातु ओड़ो: दिसुम)

'ग्रामदेश' (=ग्राम और देश)

मुण्डा माणाकि (= मुण्डा ओड़ो: माणाकि)

'मुण्डा मानकी' (= मुण्डा और मानकी)

राँची खूँटी (=राँची ओड़ो: खूँटी)

'राँची खूँटी' (=राँची और खूँटी)

सुनुम बुलुङ (= सुनुम ओड़ो: बुलुङ)

'तेलनून' (= तेल और नमक)

4. द्विगु समास :

इस समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक होता है और दूसरा शब्द प्रधान होता है।

उदाहरण,

तालानिदा (= तालाकान निदा)

'आधीरात' (=रात जो आधी बीत चुकी है)

तारासिं (= तारासा: सेनो: जान सिंगी)

'अर्ध दिन' (= दिन जो आधा बीत गया है)

गोटाचण्डु (= गोटागे मेनाइ: चण्डु:)

'पूर्ण चन्द्र' (= चांद जो पूरा गोल है)

5. बहुव्रीहि समास :

इस समास में कोई भी शब्द प्रधान न होकर दोनों मिलकर एक विशिष्ट अर्थ देते हैं। उदाहरण,

मेणेद साकोम (= मेणेद ते बाइआकान साकोम)

'लौहकड़ा' (= लोहे से बना हुआ कड़ा)

विशिष्ट अर्थ : औरत के विवाहित होने का चिन्ह।

माराङ होड़ो (माराङ लेकान होड़ो)

'बड़ा आदमी' (= आदमी जो बड़ा माना गया है)

विशिष्ट अर्थ : बाघ हाथी इत्यादि बड़े जंगली जानवर।

कासारा कोड़ा (= कासाराकान कोड़ा)

'खसरा छोकड़ा' (= छोकड़ा जिसे खुजली हुई हो)

विशिष्ट अर्थ : भगवान आसुर कहानी के संदर्भ में।

माराङगाड़ा (= माराङगे मेना: गाड़ा)

'बड़ी नदी' (= नदी जो बड़ी हो)

विशिष्ट अर्थ : तजना/करकरी नदी।

लातार दिसुम (= लातार रे मेना: दिसुम)

'नीचा देश' (= जो देश नीचा हो)

विशिष्ट अर्थ : तमाड़ बुण्डू (राँची जिलान्तरर्गत) का इलाका।

10. संयोजक खण्ड

मुण्डारी में निम्नलिखित संयोजक शब्दों का प्रयोग होता है:

1. ओड़ो:/ ओडो:/ हाड़ो:/ आद/ आर/ हार 'और'।

उदाहरण,

बोओ: ओड़ो: चादलोम मोदगे लेलो:ताना।

'सिर और पूँछ एक से दिखाई देते हैं।'

आए: ओड़ो: आञ राँची ते लिं सेनो:ताना।
'वह और मैं, हमदोनों राँची जा रहे हैं।'
हेनदे आर पुण्डि सिम कोले नाम ताना।
'हम काले और सफेद मुर्गे खोज रहे हैं।'

द्रष्टव्य :

(क) ओड़ो:, ओडो: और हाडो: का प्रयोग क्रमशः ताला (मध्य) लातार (पूरबी) और चेतान (पश्चिमी) मुण्डारी में होता है। आर का प्रयोग आर्य भाषाओं के संपर्क से हो रहा है।

(ख) ओड़ो: का संकुचित ड़ो: बलधान के लिए प्रयुक्त होता है। (देखिए पृ. 54)।

2. चा 'या'

उदाहरण,

माण्डि चा इलि, जाआना:तेगे बाइओ:आ।
'भात या इलि, किसी से भी काम चलेगा।'
काटाते चा मोटोर ते लाङ सेनो:आ।
'हमदोनों पैदल या बस से जाएँगे।'
आए: चा आम, जेताएगे हिजु: बेन।
'वह या तुम, कोई भी आए।'

3. चि 'कि (=या)' प्रश्नात्मक :

उदाहरण,

सोमा चि मुदु तानि: ?
'वह सोमा या मुदु है?'
कामि चि होनोर पे सेनो:ताना?
'तुम काम करने या घूमने जा रहे हैं?'
ओकोआ किचिरिम सुकुताना? सासङा: चि आरागा: ?
'तुम्हें कौन सा कपड़ा पसन्द है? पीला या लाल?'

4. कारे 'नहीं तो':

उदाहरण,

इलि कारे माण्डि ओमाइपे
'उसे इलि नहीं तो भात दो।'
तिर्सि कारे गापाञ सेना।

'मैं आज नहीं तो कल जाऊँगा।'

आम कारे आञ, जाएं दोलाङ दाड़िगेआ।

'तुम नहीं तो मैं, कोई तो जीतेगा ही।'

5. नागे.... नागे.... 'न .... न....'

उदाहरण,

नागे सुनुम नागे बुलुङ, जेता:ओ काए: किरिङ केदा?

'उसने न तेल न नमक, कुछ नहीं खरीदा?'

नागे आम नागे आञ, जेताए कालाङ दाड़िजाना।

'न तुम न मैं, कोई नहीं जीत सका।'

आए: नांगेन ना राबाङ ना जेटे, जेता:ओ बानो:।

'उसके लिए न सर्दी न गर्मी, कुछ भी नहीं है।'

द्रष्टव्य :

उपर्युक्त संयोजक शब्दों का प्रयोग वाक्यों को विस्तृत करने में भी होता है। देखिए वाक्य खण्ड का वाक्य संयोजन प्रकरण।

11. संबोधन खण्ड

मुण्डारी में संबोधन के लिए निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग होता है :

1. ए, ओ, हे! ओ!: इनका प्रयोग संबोधन व्यक्ति के नाम या पदवी के पहले होता है।

उदाहरण,

ए सुगि, ओकोतेम सेनो:ताना?

'हे सुगि, तुम कहाँ जा रही हो?'

ओ अचु, हिजु:मे।

'ओ अचु, आओ।'

ए गोमके, आमले आरजिआम ताना।

'हे मालिक, हम तुमसे प्रार्थना करते हैं।'

2. गा 'सम्मान्य' : इस शब्द का प्रयोग किसी सम्मान व्यक्ति को संबोधित करने के लिए उसके नाम, सर्वनाम संबंध शब्द के बाद होता है।

उदाहरण,

मानाए गा, आबेन को रा:जादबेना।

'मानाए जी, लोग आपको बुला रहे हैं।'

एआङगा, मेना: मेआचि?

'माँ, तुम घर पर हो?'

आपेगा, एला दुब को:पे।

'सुनते है, आइए जरा बैठिए।'

3. हो, हाले 'भाई, साथी': समान उम्र या पद वाले पुरुष के बीच आपसी संबोधन में नाम या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होता है।

उदाहरण,

नागु हो, चाना:म कामिताना?

'नागु भाई, क्या काम कर रहे हैं?'

आम हाले, एलालाङ जागार को:आ।

'हे भाई, आओ, बात कर लें।'

द्रष्टव्य :

(क) सामान्यतया 'हो' का प्रयोग लातार मुण्डारी में और 'हाले' का प्रयोग ताला मुण्डारी में होता है।

(ख) पति-पत्नी के बीच आपसी संबोधन में भी इन शब्दों का प्रयोग होता है।

4. गाले/बाई 'सखि.....' : समान उम्र या पदवाली औरतों के बीच आपसी संबोधन में नाम या सर्वनाम के बाद इन शब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरण,

आम बाइ आचि, आमलो: मिआद जागार, मेना:।

'सखि आचि, तुमसे एक बात है।'

आम गाले, एनका दो आलोम काजीआ।

'सखि, वैसा न कहना।'

सुगि बाइ, ने दिन दो ओकोरेम आङताना?

'सखि सुगि, आजकल तुम कहाँ रहती हो?'

द्रष्टव्य :

सामान्यतया 'गाले' का प्रयोग चेतान मुण्डारी और 'बाइ' का प्रयोग ताला और लातार मुण्डारी में होता है।

5. आ/या 'अरे': इनका प्रयोग बड़ों (स्त्री-पुरुष) द्वारा छोटों (पुरुष) को संबोधित करने में होता है। ये नाम, सर्वनाम या संबंध शब्दों के बाद आते हैं।

आमाम आयुमजादा चि?

'अरे सुन रहे हो?'

सोमाया, मेना: मेआ चि?

'अरे सोमा, घर पर हो?'

बाबुआ, एला हिजु:मे।

'अरे बबुआ, आओ'

द्रष्टव्य :

(क) नाम, सर्वनाम और संबंध शब्दों के संयुक्त रूप से प्रयोग होने पर पहले शब्द के बाद ही संबोधन शब्द आता है।

उदाहरण,

आम बाबु सोमा, ओकोतेम सेनो:जाना?

'अरे बबुआ सोमा, तुम कहां गए?'

(ख) बड़े भाई को छोटा भाई या छोटी बहन प्यार से आ/या से संबोधित कर सकता/सकती है। इस तरह

दादाया, बुरूतिरिल रूकुआलाङ मे

'अरे भाई, पहाड़ी केऊंद गिरा दो।'

(ग) छोटे लड़के लड़कियों की जमात को आ/या से संबोधित किया जा सकता है। जैसे,

आपेआ होनकोपे बुगिगेआ चि?

'अरे बच्चों, अच्छे तो हो?'

6. ना/गे/गो (अ) री' : इनका प्रयोग बड़ों (स्त्री-पुरुष) द्वारा छोटों (स्त्री) को संबोधित करने में होता है। ये नाम, सर्वनाम या संबंध शब्दों के बाद प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण,

सुगि गो ओकोतेम सेनो:ताना?

'री सुगि, तुम कहाँ जा रही हो?'

आमगेम आयुम जादा चि?

'री लड़की, सुन रही हो?'

साकिङ ना, एला कामि देंगाञ मे।

'री पोती, आओ काम में मदद करो।'

द्रष्टव्य :

(क) नाम, सर्वनाम और संबंध शब्दों के संयुक्त रूप से प्रयोग होने पर पहले शब्द के बाद ही संबोधन शब्द आता है।

उदाहरण,

आम ना साकिङ, ने दिनदो लेलो काम लेलो:आ।

'री पोती, तुम आजकल दिखाई तक नहीं देती।'

(ख) 'गो' का प्रयोग लातार मुण्डारी में ही होती है।

(ग) प्यार से बड़ी दीदी को भी छोटे भाई बहनों द्वारा ना/गे/गो द्वारा संबोधित किया जा सकता है।

उदाहरण,

दाइ ना आमलेका सुपिदताञ मे।

'अरी दादी, तुम्हारी ही तरह मेरा भी जूड़ा बाँध दो।'

7. रे 'री' : इसका प्रयोग बड़ों (स्त्री-पुरुष) द्वारा छोटों (स्त्री-पुरुष) को प्यार से संबोधित करने में होता है। यह नाम, सर्वनाम या संबंध शब्द के बाद प्रयुक्त होता है।

उदाहरण,

आमरे मेना: मेआ चि?

'अरे (लड़का/लड़की) क्या तुम घर में हो?'

बाबुरे, ओकोतेम जाना?

'अरे बबुआ, तुम कहाँ गए?'

माइआ रे, एंगाम रा:जादमेआ।

'री लड़की, तुम्हें तुम्हारी माँ बुला रही है।'

द्रष्टव्य :

नाम, सर्वनाम या संबंध शब्दों के संयुक्त रूप से प्रयोग होने पर संबोधन शब्द के बाद आता है।

उदाहरण,

आमरे अचि, काचिम आयुमजादा?

'री अचि, क्या तुम नहीं सुन रही हो?'

बाबुरे बिनाए, काजि आपायुम मे।

'अरे बबुआ बिनाए, तुम बात माना करो।'

12. वाक्य खण्ड

पिछले खण्डों में दिए गए उदाहरणों से आभास मिला होगा कि मुण्डारी वाक्य में व्याकरणगत तत्त्वों का क्रम करीब-करीब हिन्दी की ही तरह होता है। अर्थात् किसी वाक्य में सबसे पहले कर्त्ता आता है, इसके बाद कारकत्त्व और अन्त में क्रिया रूप। उदाहरण के लिए,

बलि चिटिः ओलताना। 'बालि चिट्ठी लिख रहा है।'
बालि उरिः किनतेः सीताना। 'बालि बैलों से खेत जोत रहा है।'
बालि होनको नांगेनेः कामिताना। 'बालि बच्चों के लिए काम कर रहा है।'
बालि राँचीआतेः हिजुःताना। 'बालि राँची से आ रहा है।'
बालि राजाकोआएः कामिताना। 'बालि राजा का काम कर रहा है।'
बालि टाटा रेः कामिताना। 'बालि टाटा में काम कर रहा है।'

ऊपर के वाक्यों में कर्त्तापद, कारकपद और क्रियापद में से प्रत्येक का विस्तार संबंधित व्याकरणगत तत्त्वों के विशेषीकरण द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ऊपर के पहले वाक्य के कर्त्ता बालि को बाइरा बालि 'बहरा बालि', सोमाः होन बालि, 'सोमा का लड़का बालि', रूआतान बलि 'बीमार बालि' इत्यादि बना सकते हैं। उसी तरह वाक्य के कर्मपद चिटि 'चिट्ठी' को हम हुड़िंलेकन चिटि 'छोटी सी चिट्ठी' और क्रियापद के ओलतान 'लिख रहा है' को माणि माणितेः ओलताना 'धीरे-धीरे लिख रहा है', होलाआतेः ओलताना 'कल से लिख रहा है।' इत्यादि बना सकते हैं। शेष वाक्यों का विस्तार भी इसी तरह से किया जा सकता है।

वाक्य प्रकार :

मुण्जरी वाक्यों के निम्नलिखित प्रकार गिनाए जा सकते हैं।

1. सत्ता बोधक :

जिस वाक्य से किसी क्रिया के होने की स्थिति का पता चलता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य,

बालिः कामिताना। 'बालि काम कर रहा है।'

में कर्त्ता (बालि) के काम करने की वर्त्तमान स्थिति का बोध होता है। उसी तरह वाक्यांशों के परिवर्त्तन द्वारा दूसरे कालों या दूसरे वाच्यों में अन्य प्रकार की स्थितियों में क्रिया के सम्पन्न होने की सूचना दी जा सकती है।

2. प्रश्न बोधक :

जिस वाक्य से कोई प्रश्न पूछा जाता है। मुण्डारी में वाक्यांत में प्रश्नबोधक शब्द

चि या काचि 'है न?' लगाकर प्रश्नबोधक वाक्य बनाए जाते हैं।

बालि: कामिताना चि? 'क्या बालि काम कर रहा है?'

बालि चि: कामिताना? 'क्या बालि काम कर रहा है?'

बालि: कामिताना काचि? 'बालि काम कर रहा है, है न?'

द्रष्टव्य:

हिन्दी की ही तरह बिना प्रश्नसूचक शब्द के भी सिर्फ वाक्यांत उच्चरित लय द्वारा प्रश्न का बोध किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में लिखने में सिर्फ प्रश्न चिन्ह द्वारा इसे व्यक्त किया जा सकता है: बालि: कामिताना? 'बालि काम कर रहा है?'

3. नकार बोधक :

जिस वाक्य से क्रिया के न होने की सूचना मिले। मुण्डारी में क्रिया रूप के पहले 'का' लगाने से नकार बोधक क्रिया रूप बनता है। यह द्रष्टव्य है कि 'का' के बाद कर्त्ता का सार्वनामिक और वाचनिक मेलक तत्त्व भी लगेंगे।

उदाहरण,

नारान काए: कामितान। 'नारान काम नहीं कर रहा है।'

आकिं काकिं बिरिद दाड़िताना। 'वे दोनों उठ नहीं सक रहे हैं।'

बुदु ताको ओड़ा: रे काको ताइकेना। 'बुदु इत्यादि घर में नहीं थे।'

हागाम काए: हिजु:आ। 'तुम्हारा भाई नहीं आएगा।'

4. संदेह बोधक :

जिस वाक्य में क्रिया के होने के प्रति सन्देह व्यक्त किया जाता है। ऐसा वाक्य सत्ताबोधक वाक्य के बाद जा: लगाने से बनता है।

उदाहरण,

होने: दुडुमताना जा:। 'बच्चा शायद सो रहा है।'

आको राँची को लेलाकादाजा:। 'उन्होंने शायद राँची शहर देखा है।'

सुमि चिटि: ओलेआ जा:। 'सुमि शायद चिट्ठि लिखेगी।'

5. अन्यमन स्कता बोधक :

जिस वाक्य से क्रिया के उदासीन भाव से होने की सूचना मिले। ऐसे वाक्य की रचना सत्ताबोधक वाक्य के अन्त में 'होनाङ' लगाने से होता है।

उदाहरण,

कामितानाए होनाङ। 'वह काम तो कर रहा है (लेकिन....)।'

सेनकेनाको होनाङ। 'वे गए तो थे (लेकिन....)।'

हिजुगाले होनाङ। 'हम आने को तो आते (लेकिन....)।'

6. निश्चय बोधक :

जिस वाक्य से क्रिया के निश्चित रूप से होने की सूचना मिले। इसकी रचना सत्ताबोधक वाक्य के अन्त में 'बादकाम' लगाने से होती है।

उदाहरण,

हिजु:तानाए: बादकाम। 'वह निश्चित रूप से आ रहा है।'

बुदु ओड़ा: रे मेनाइ:आ बादकाम। 'बुदु निश्चत रूप से घर पर है।'

इतु आनाञ बादकाम। 'मैं निश्चित रूप से जानता हूँ।'

द्रष्टव्य :

उपर्युक्त वाक्यों के पहले 'लोगों के वैसा नहीं समझने के विपरीत' अर्थ सम्मिलित होते हैं।

वाक्य संयोजक :

'मुण्डारी' में वाक्य संयोजन संयोजक शब्दों के द्वारा सम्पन्न होता है। इनमें से कुछ की चर्चा हम वाक्यांश स्तर पर पहले ही (देखिए पृ. 59) कर चुके हैं। वाक्य विस्तार के लिए इनके साथ ही कुछ और संयोजक शब्दों का व्यवहार होता है।

1. ओड़ो:/ ओडो:/ हाडो:/ आद/ आर/ हार 'और':

उदाहरण,

नेरेगे कामिपे आर जोमेपे।

'तुम यहीं काम करो और खाओ।'

मांगु एनते: सेनो: जाना आ'र एनरेगे: ताइनजाना।

'मांगु वहाँ चला गया और वहीं रह गया।'

2. चा 'या' (विकल्पात्मक):

उदाहरण,

आए: हिजु: चा काए: हिजु:, आमदो हिजु:मेगे।

'वह आए या न आए, तुम तो अवश्य आओ।'

कामितान चाए: दुबाकान, इनि: नालाए: नामे गेआ।

'वह काम कर रहा हो या बैठा हो, वह मजदूरी पाएगा ही।'

द्रष्टव्य :

संयोजक चा की दोनों ओर की क्रियाओं में क्रिया पूरक 'आ' का लोप होता है।

3. चि 'या' (प्रश्नात्मक) :

उदाहरण,

हागाम राँची रे मेना:इआ चि पटना रे?

'तुम्हारा भाई राँची में है या पटना में?'

मुदुइ: कामिताना चि: होकाताना?

'क्या मुदुकाम कर रहा है या उसने काम करना छोड़ दिया।'

द्रष्टव्य :

दोनों वाक्यों की क्रिया एक ही रहने पर क्रिया की पुनरावृत्ति आवश्यक नहीं है।

4. चि 'कि' :

उदाहरण,

इनि: मेन केदा चि गापाले हिजु:आ।

'उसने कहा कि हम कल आएंगे।'

आको काजिआकोम चि हाड़ाम रुआ ताना।

'उन्हें बताना कि बूढ़ा बीमार है।'

5. चि 'कर' :

उदाहरण,

माण्डि जोमकेद चि: सेनो:जाना।

'वह खाना खाकर चला गया।'

साबाकाञ चि: दालजा:ञा।

'वह मुझे पकड़कर मार रहा है।'

द्रष्टव्य :

चि के पहले क्रिया पूरक आ का लोप होता है।

6. काआरेदो 'नहीं तो':

उदाहरण,

हिजु:मे काआरेदो दालेम नामेआ।

'आओ नहीं तो मार पाओगे।'

काञ इतुआना काआरेदोञ उदुबामेआ होनाङ।'

'मुझे पता नहीं है नहीं तो मैं तुम्हें बताता।'

द्रष्टव्य :

होनाङ के पहले के क्रिया पूरक आ के बदले विकल्प से तेआ: का प्रयोग होता है। इस तरह,

उदुबामेआ होनाङ– उदुबामतेआ: होनाङ।

7. नागे नागे 'न......न' :

उदाहरण,

(आञ) नागेञ बुगिओ:ताना, नागेञ गोएओ:ताना।

'मैं न स्वस्थ हो रहा हूँ न मर रहा हूँ।'

(आए) नागे सुसुने:इतुआन, नागे सिउ:।

'वह न नाचने जानता है न हल चलाने।'

8. रेदो 'अगर–तो'

उदाहरण,

राँचीतेम सेनो:तान रेदो किताब आउजाम।

'अगर तुम राँची जा रहे हो तो किताब लेते आओ।'

एराङ जादमेरेदो आलोम सेनो: रूआड़ा:।

'अगर तुम्हें लोग गाली दे रहे हैं तो वापस न जाओ।'

राबाल गेरेदोञ गो: दाड़िआ:।

'अगर भार हल्का ही है तो मैं उसे ढो सकूँगा।'

द्रष्टव्य :

रेदो के पहले के क्रिया रूप से क्रियापूरक आ का लोप होता है।

9. मेनदो 'लेकिन, किन्तु':

उदाहरण,

आपे ओड़ा:तेञ सेनकेना मेनदो आपे कापे ताइकेना।

'मैं तुम्हारे घर गया था लेकिन तुम नहीं थे।'

टाकाए: नानामा मेनदो आलोपे ओमाइआ।

'वह रूपया खोजेगा लेकिन तुम उसे न देना।'

10. इमिन रेओ 'तब भी, फिर भी':

उदाहरण,

उदुबाइ तानााले इमिनरेओ काए: बुजाओ: तानगेआ।

'उसे हम बता रहे हैं फिर भी वह समझ नहीं रहा है।'

ओमादमेआको इमिनरेओम नामतानगेआ।

'लोगों ने तुम्हें दिया फिर भी मांग ही रहे हो।'

11. ओको.... एन 'जो/जिस सो/वह/ उस':

इस प्रकार के वाक्य विस्तार को सापेक्षीकरण भी कहते हैं।

उदाहरण,

ओकोआम नामताना एना बानो:।

'जो तुम खोज रहे हो वह नहीं है।'

ओको होड़ो नेरे: दुबाकान ताइकेना इनि: कोति: जाना?

'जो आदमी यहाँ बैठा हुआ था वह कहाँ चला गया?'

द्रष्टव्य :

मुण्डारी में हिन्दी (तथा अन्य आर्य भाषाओं) की सापेक्ष भावना की अनुभूति एक दूसरे प्रकार से भी होती है। इसे हम क्रियात्मक विशेषीकरण कह सकते हैं। इस तरह,

कामिकेन होड़ो 'काम किया आदमी' (=जिस आदमी ने काम किया)

ओलतान कुड़ि 'लिख रही -औरत' (= जो औरत लिख रही है)'

सेनो:जान गाड़ी 'गई-गाड़ी' (= जो गाड़ी गई)

और इनका विस्तृत प्रयोग :

कामिकेन होड़ो माण्डि ओमाइपे।

'जिस आदमी ने काम किया उसे खाना दो।'

ओलतान कुड़ि ओकोरेनि: तानि:।

'जो औरत लिख रही है वह कहाँ की है?'

सेनो:जान गाड़ी चिमताङ हिजु: रूआड़ा:?

'जो गाड़ी चली गई वह कब वापस आयेगी?'

12. चिलका...... एनका 'जैसा/ जिस तरह.... वैसा/ उस तरह':

उदाहरण,

चिलकाए: हिजु:लेना एनकागे सेनो: रूआड़ा जाना।

'वह जिस तरह आया था उसी तरह चला गया।'

चिलकाना:म नामताना एनकाना: दो बानो:।

'तुम जिस तरह की चीज ढूँढ़ रहे हो उस तरह की तो नहीं हैं।'

13. उद्धरीकरण द्वारा :

मुण्डारी में उद्धरित वाक्य के बाद मेनते 'कहकर/ ऐसा' (संस्कृत की इति की तरह) जोड़कर मुख्य वाक्य शुरू होता है।

उदाहरण,

बुगिगेआले मेनते को काजि कुलाकादा।

'हम अच्छे ही हैं, ऐसा उन्होंने कह भेजा है।'

चाउलि चाबाजाना मेनते उदुबाकोम।

'चावल खत्म हो गया, ऐसा उन्हें बता देना।'

राजा होन मेनते को बागेकि:आ।

'राजपुत्र है, कहकर लोगों ने उसे छोड़ दिया।'

14. कारक प्रत्ययों द्वारा :

कारक प्रत्ययों का प्रयोग भी वाक्य विस्तार के लिए किया जाता है।

उदाहरण,

ते — लेलजादते: नेकाजादा।

'वह देखते हुए ऐसा कर रहा है।'

लो: — साबजाइलो: गे: उयु:जाना।

'पकड़ते ही वह गिर गया।'

आते — माण्डि जोमकेआते सेनो:मे।

'खाना खाकर जाओ।'

आ: — आबुजोम जादा: गे: नामताना।

'जो हम खा रहे हैं उसे ही वह चाहता है।'

रे — आले कामितान रे: तेबा:ला:।

'जब हम काम कर रहे थे तभी वह पहुँचा।'

वाक्योत्तर :-

यहाँ वाक्योत्तर से हमारा तात्पर्य प्रतिक्रियात्मक उत्तर से है।

1. प्रश्नबोधक वाक्यों के निम्नलिखित वाक्योत्तर होते हैं:-

(क) स्वीकारात्मक हे, 'हाँ':

उदाहरण,

प्र.— राँचीम लेलाकादा चि? 'क्या तुमने राँची देखा है?'

उ.— हे। 'हाँ'।

प्र. — ओले: इतुआना चि? 'क्या वह लिखना जानता है?'

उ. — हे। 'हाँ'।

(ख) नकरात्मक का 'नहीं':

उदाहरण,

प्र. — कुलाम लेलाका:इआ चि? 'क्या तुमने बाघ देखा है?'
उ. — का। 'नहीं'।
प्र. — एन होड़ोआ: नुतुमेम इतुआना चि? 'क्या तुमने उस आदमी का नाम जानते हो?'
उ. — का। 'नहीं'।
(ग) उदासीनता बोधक इदु 'मैं नहीं जानता/ मुझे पता नहीं।'
उदाहरण,
प्र. — डाड़िरे दा: मेना: चि? 'क्या कुवें में पानी है?'
उ. — इदु। 'पता नहीं।'
प्र. — इनि: दो बुदु चि? 'क्या वह बुदु है?'
उ. — इदु। 'पता नहीं।'
द्रष्टव्य :

उपर्युक्त तीनों प्रकार के उत्तरों के बाद जाआ: 'शायद' जोड़ने से उत्तरों में सन्देहात्मकता सम्मिलित होती है।

इस तरह,

हे जाए: लेलाकादा।
'हाँ, शायद उसने देखा है।'
का जाए: लेलाकादा।
'नहीं, शायद उसने नहीं देखा है।'
इदु जाए: लेलाकादा।
'पता नहीं, हो सकता है उसने देखा है।'

2. सत्ता बोधक वाक्यों के निम्नलिखित वाक्योत्तर होते हैं :
(क) साश्चर्य अभिज्ञता बोधक काचि! सारते! सच! ऐसी बात है?!'
उदाहरण,
प्र. — रतुनु कालेज रे: भरतीजाना। 'रतनु कालेज में प्रवेश पा गया।'
उ. — काचि! 'अरे सच!'
(ख) साश्चर्य अविश्वास बोधक एला! 'विश्वस नहीं होता!'
एला! पे तेबाला:? 'अरे, तुम आ गए? विश्वास नहीं होता।'
वाक्यार्थक्षेपन :

किसी वाक्य से विलंवित स्मरण प्रक्रिया या औपचारिकता के कारण अर्थ छिपाने को वाक्यार्थ क्षेपन कहते हैं। व्याकरण की दृष्टि से वाक्य पूरा होता है लेकिन उसका अर्थ उधूरा ही रहता है। हिन्दी में 'अमुक' और 'जो है सो' ऐसे ही शब्द और

वाक्यांश हैं जिनसे किसी वाक्य का अर्थ क्षेपन होता है। मुण्डारी में यह काम इआ शब्द द्वारा सम्पन्न होता है।

उदाहरण,

एनाङ इआए: हिजु:लेना। 'तभी अमुक आया था।'

इनि: इआए: मेनला:। 'उसने जो है सो कहा था।'

नेता:रे होन इआकेदा। 'बच्चे ने यहाँ जो है सो कर दिया।'

13. काव्यभाषा खण्ड

छन्दों के बन्धन में बन्धे रहने एवं अन्य काव्य रूढ़ियों के कारण हर साहित्य में काव्य की भाषा सामान्य बोल-चाल (गद्य) की भाषा से अलग होती है। मुण्डारी काव्यभाषा इसका अपवाद नहीं है। मुण्डारी गीत कविता (विशेषकर लोकगीत) साहित्य पढ़ते सुनते समय पाठक श्रोता को निम्नलिखित भाषागत परिवर्त्तनों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. न का पूर्वागम :

शब्दारंभिक स्वर या 'ह' के पहले विकल्प से 'न' का आगम होता है। इस तरह,

आला → नाला 'खिलना'

इआम → निआम 'रोना'

उदुब → नुदुब 'बाताना'

एकेला → नेकेला 'हिलना'

ओको → नोको 'कौन'

हातु → नातु 'गांव'

हिसि → निसि 'बीस'

हुदुमा → नुदुमा 'फेंकना'

हेसा: → नेसा: 'पीपल'

होसोर → नोसोर 'घिसकना'

द्रष्टव्य :

'ह' से आरंभ होनेवाले शब्दों में 'न' के पूर्वागम के बाद 'ह' का लोप होता है।

2. ए का आगम :

(क) मुण्डारी छन्द के एक प्रकार में किसी पद गुच्छ के प्रथम पद में दो अक्षरों (=स्वर सहित दो व्यंजनों) का होना आवश्यक है। जब यह शर्त गद्य की भाषा से पूरी

नहीं होती है तो इसे पूरी करने के लिए वैसी जगहों में 'ए' का आगम होता है। इस तरह जादुर गीत की निम्नलिखित पंक्ति

सिदलेगे मोनीञा मानिदो

'मुझे सरसों का साग तोड़ने का मन करता है।' मे सिद 'तोड़ना' को सिदे पढ़ना गाना पड़ता है। उसी तरह,

सुद दाः रेगेञ आटामेआ → सुदेदागे रेगेञ आटामेआ।

पंछी मैं तुम्हें झरने के पानी के पास फंसाऊँगा।'

बुरू आतेञ लेलमेरे गातिञ → बुरूआतेञ लेलेमेरे गातिञ।

'प्रिय, जब मैं तुम्हें पहाड़ पर से देखता हूँ।'

(ख) गीत पंक्ति की व्यंस्वव्यंस्वव्यं व्यंस्व (व्यं)

वाली पद व्यवस्था व्यंस्वव्यंस्व व्यंएव्यंस्व (व्यं) के रूप में पढ़ी सुनी जाती है। इस तरह,

चिमिन चिमिन गोम डिंडालेदा → चिमिन चिमिनेगोम डिंडालेदा

'लड़की, तुम कितने वर्षों तक कुंवारी रही?'

एंगामको बा काटाब ताना माइ → एंगामेको बा काटाब ताना माइ

'हे लड़की, तुम्हारी माँ-बाप सरहुल का उपवास कर रहे हैं।'

चिरे गातिञ रे चिलाङ मेने → चिरे गातिञेरे चिलाङ मेने

'प्रिय, कहो, हम क्या कहें?'

डुबालेकान सुपिदते उकुञ मे हो → डुबालेकान सुपिदेते उकुञ मे हो

'प्रिय, तुम मुझे अपने कटोरे से जुड़े की आड़ में छिपाओ।'

3. क्रिया पूरक 'आ' का लोप :

सातपदी पंक्तियों को छोड़कर अन्य सभी पंक्तियों में अंतिम क्रिया पूरक 'आ' का लोप होता है। इस तरह,

आमदो माइ काम जुड़िजाना → आमदो माइ काम जुड़िजान

'हे लड़की तुम्हारी जोड़ी नहीं लगी।'

दादाया काञ इतुआना → दादाया काञ इतुआन

'हे भाई मुझे (दिकु भाषा) नहीं आती।'

लागोम दो काम कुलादिञा → लागोम दो काम कुलादिञ

'(हे राजा), तुमने मेरे लिए लगाम नहीं भेजी।'

4. छन्दगत आवश्यकताओं के कारण कभी कभी कुछ क्रियाओं का भी लोप होता है।

(क) तान 'कोई होना' क्रिया का लोप :

नेआ दोगो नेआ दो चिकान दारू

'प्रिय, यह पेड़, यह कौन-सा पेड़?'

नाइ दो हो ओकोरेन बाण्डा सेता

'साथी, यह कहां का पूँछ विहीन कुत्ता है?'

ऊपर के उदाहरणों में क्रिया रूप ताना:, तानि: 'है' का लोप हुआ है।

(ख) मेना: 'कहीं होना' क्रिया का लोप :

बुरू रे बुरू रे मानि दो

'पहाड़ पर, पहाड़ पर सरसों।'

मेरोम गुपि चोड़ेआ मायाङ रे रांगा रूतु

'बकरी चराने वाला छोकड़ा, कमर में रंगीन बांसुरी।'

ऊपर के उदाहरणों में क्रिया रूप मेना: 'है' का लोप हुआ है।

(ग) हिजु: 'आना' क्रिया का लोप :

चेतानाते सारगा दांगिड़ि

'ऊपर (की ओर) से सराक युवती।'

बुरू सोंगा, सोंगाते दो होयो चि साराजोम

'पहाड़ों के बीच से हवा या साखू की पत्तियाँ?'

ऊपर के उदाहरणों में हिजु:ताना 'आ रही है' क्रिया रूप का लोप हुआ है।

5. काव्यभाषा में प्राय: संयोजकों का अभाव पाया जाता है।

(क) ओड़ो: 'और' का लोप :

दिउड़िरे दो हो दिउड़ि लुदाम बा।
सारमालि रेदो हो सारमालि चाम्पा बा।।
'दिउड़ि में दिउड़ि लुदाम फूल है।
सारमाली में सारमाली चाम्पा फूल।।'

(ख) मेनदो 'लेकिन' का लोप :

बाको: हो ले बाइआ:इआ।
बाको: हो हुला:जाना।।

'हमने उसके लिए अंकुश बना दिया।
साथी 'अंकुश टूट गया।।'

(ग) एनामेनते 'इसलिए' का लोप :

गातिम हिजु:तान।
चाउलिम चापितान।।

'तुम्हारा साथी आ रहा है।
तुम चावल धो रही है।।'

(घ) चिआ:चि 'क्योंकि' का लोप :

आञ दोगा काञ तोलेना
गातिम बांगाइअ

'मैं (आम की पत्ती) नहीं बाधूँगा।
मेरा साथी नहीं है।।'

6. काकल्य ध्वनि (:) का लोप :

गायन में गेयपंक्ति में स्वर अनवरूद्धता की आवश्यकता होती है। इसलिए ऐसी इकाइयों से काकल्य ध्वनि (:) का लोप होता है क्योंकि स्वरावरोध ही इस ध्वनि की प्रकृति है। इस तरह,

आलेआ: दिसुम तेपे सेनो: रेदो → आलेआ दिसुम तेपे सेनो रेदो

'यदि तुम हमारे देश जाओगे तो......'

हिजु: सेनो: राजाञ लेलमेआ → हिजु सेनो राजाञ लेलेमेआ

'राजा, मैं तुम्हें आते-जाते देखता हूँ।'

7. ध्वनि तत्त्वों का पुनर्समायोजन :

कुछ ऐसे बिरले उदाहरण मिलेंगे जहाँ गीत-भाषा में ध्वनि तत्त्वों का पुनर्समायोजन हुआ है। नीचे के उदाहरण में काकल्य ध्वनि (:) का पुनर्समायोजन 'ङ' के रूप में हुआ है। यह द्रष्टव्य है कि : और 'ङ' में एक स्वाभाविक संबंध है — दोनों ही कण्टय हैं। इस तरह,

मारा: सिलि डारेनरे → माराङ सिलि डारेन रे

'मारा: सिलि (क्षेत्र) के रास्ते में......।'

8. विशिष्ट शब्द प्रयोग :

मुण्डारी काव्य भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जो बोल-चाल (गद्य) की भाषा में प्रयुक्त नहीं होते।

उदाहरण,

डारे 'रास्ता' गामाए 'इलाका'
नापाए 'अच्छा' सुद 'स्रोत'
सुआणा 'सुनना' चिमाए 'कहाँ'

9. पुनरावृत्ति :

मुण्डारी लोक (परंपरागत) काव्य भाषा में पुनरावृत्ति की बहुलता एक ऐसी प्रवृत्ति है जो इस भाषा की काव्य परंपरा को समस्त भारतीय भाषाओं में एक विशिष्टता प्रदान करती है। इस 'पुनरावृत्ति सिद्धान्त' के अनुसार प्रत्येक गेय वाक्य या वाक्यांश किसी न किसी रूप में पुनरावृत्त होता है। गेय तत्त्वों पर बल देना और उन्हें एक दूसरे पर्यवाची वाक्य द्वारा स्मरण करना ही इस प्रक्रिया के मूल उद्देश्य लगते हैं। उदाहरण,

दादाया दिकु काजि दो दादाया काञ इतुआन।
दादाया बांगालिआ दो दादाया काञ सारिआन।
'हे भाई, दिकु भाषा, हे भाई, मैं नहीं जानता।'
हे भाई बांगला भाषा, हे भाई मुझे नहीं आती।।
एलारे साराजोम बा एलारे हाड़ागुन मे।
एलारे सुड़ासांगेन एलारे होसोरेन मे।।
'आओ हे साखू के फूल, आओ उतरो।
आओ, हे नवपल्लव, आओ नाभो।।'

मुण्डारी काव्य की बिंबविधान को इस पुनरावृत्ति प्रवृत्ति से निश्चित रूप से एक बल मिला है जिसकी विस्तृत चर्चा हम कहीं और कहेंगे।

Dr. RAM DAYAL MUNDA : A BRIEF BIO DATA

BIRTH

Village : Diuri, P.O. Tamar, Ranchi, Jharkhand, 1939.

EDUCATION

Lutheran Mission School, Amlesa, Tamar, Ranchi, 1946-53.
S.S. High School, Khunti, Ranchi, 1953-57.
Ranchi University, Ranchi, 1957-63, M.A. (Anthropology).
University of Chicago, USA, 1963-70, M.A. PhD (Linguistics).

RESEARCH AND TRAINING

Research Assistant, South Asian Languages and Civilizations, University of Chicago, 1963-70.
Assistant Professor- Associate Professor, South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1970-81.
University Professor, Tribal and Regional Languages, Ranchi University 1981-99.
Visiting Professor, Australian National University, Canberra, 1983.
Visiting Professor, Syracuse University, New York, 1996.
Visiting Professor, Tokyo University of Foreign Studies, 2001.

FELLOWSHIPS

American Institute of Indian Studies, 1977-78.
United States Education Foundation in India, 1996.
Japan Foundation, Tokyo, 2001.

FIELD OF RESEARCH AND TEACHING

Indian Languages and Literatures.
Tribal Peoples of India.
World Indigenous Movement.
Jharkhand Movement.
Reconstructing Jharkhand.

ADMINISTRATIVE SERVICES

Pro Vice-Chancellor, Ranchi University, 1985-86.
Vice-Chancellor, Ranchi University, 1986-88.

MEMBERSHIP IN NATIONAL/INTERNATIONAL COMMITTEES/ORGANIZATIONS

1. Committee on Jharkhand Matters, Government of India, 1989-95.
2. Anthropological Survey of India, 1989-95.
3. National Education Policy Review Committee, 1990.
4. Steering Group, Planning Commission, 1996-2000.
5. Expert Committee, National Commission, Women, 1997-2000.
6. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief President).
7. Indian Confederation of Indigenous and Tribal Peoples, 2000-08 (Chief Advisor).
8. National Advisory Board, International Labour Organization (ILO), 1997-2000.
9. Executive Committee, Jawaharlal Nehru University, 1990-1995.
10. Executive Committee, North Eastern Hill University, 1993-1996.
11. Jharkhand Peoples Party, 1991-98(Chief President).
12. Adim Jati Seva Mandal, 1990-Present. (President)
13. Jharkhand Sanskritik Morcha, 1998-Present (President).
14. Ranchi University PG Teachers' Association, 1998-2000 (President).
15. Bharatiya Sahitya Vikas Nyas, 1998-Present (Secretary).
16. Binrai Institute of Research and Action, 1997-Present (President).
17. Standing Committee, Human Rights Education University Grant Commission, 1998-2001.
18. National Committee for Promotion for Social & Economic Welfare, 1998-2001.
19. Expert Committee, Sahitya Academy, 1999-Present.
20. National Council for Teachers Education, 2000- 2003.
21. Working Group on Empowerment of Scheduled Tribe, Planning Commission, 2000-2005. (Chairman).
22. All India Literary Forum, (President, 2005—present).
23. Technical Support Group for Formulation of Rules to Operationalise the Schedule Tribe and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006, Ministry of Tribal Affairs, Government of India, 2007, (Member).
24. Committee to Setup Central Tribal University, 2007, (Member).

PARTICIPATION IN INTERNATIONAL MEETINGS/CONFERENCE

1. Festival of India in USSR, 1987 (Leader of the delegation).
2. International Music Workshop, Bali, Indonesia, 1988.
3. International Dance Alliance, Manila, Philippines, 1989
4. International Folk Dance Festival, Taipei, 1990.
5. Adivasi Campaign in Europe, 1993.
6. Dalit Campaign in Europe, 1994.
7. International Conference on Indigenous Economy, Copenhagen, Denmark 1997.
8. United Nations Working Group on Indigenous Populations, Geneva, 1987-Present (Leader of the delegation).
9. International Alliance for Indigenous Peoples of the Tropical Forests, Nagpur, 1998.
10. Asian Indigenous Peoples' Conference on UN Permanent Forum on Indigenous. Peoples, Indore, 1999.
11. International Conference on Hunting and Games, Berlin, 2000.
12. International Conference on Indigenous Peoples, Upsala, Sweden, 2002.
13. Asian Indigenous Peoples Conference on UN Permanent Forum on Indigenous Issue, Bangkok, 2002.
14. The UN Permanent Forum on Indigenous Issues, New York, 2002-Present.

PUBLICATIONS

1. Four Mundari Jadur Songs in THE EAST WEST REVIEW 2(3), 1966(with Norman Zide).
2. HISIR (Necklace, Modern Mundari Songs), Sahkari Prakashan, Ranchi,1967
3. SELED (Miscellaneous Poems in Mundari, Nagpuri and Hindi), Sahkari Prakashan, Ranchi,1967
4. PROTO-KHERWARIAN SOUND SYSTEM, Department of South Asian Languages and Civilization, University of Chicago, 1967
5. Songs on Birsa and his Movement in Journal of Social Research 12, Department of Anthropology, Ranchi University, 1969 (with Norman Zide)
6. Descriptive Dialogue Songs in Mundari in M.C. Pradhan, P.K. Mishra and D.J. Shastri(Eds.) ANTHROPOLOGY AND ARCHEOLOGY, Oxford University Press, Bombay, 1969 (with Norman Zide).
7. Aspects of the Mundari Verb in Indian Linguistics 30, 1969.
8. Structural influence of Bengali Vaishnav songs on Traditional Mundari songs in JOURNAL OF SOCIAL RESEARCH 13, Department of Anthropology, Ranchi University, 1970.
9. MUNDARI GĪTKĀR, SHRI BUDU BABU AUR UNKI RACHNAE, Adivasi Sahitya Parishad, Ranchi, 1974.
10. OCEAN OF LAUGHTER, English Translation of Hāsyārnava (The Sanskrit Play by Jagadishwara Bhattacharya), Writers Workshop, Calcutta, 1975 (with David Nelson).
11. STRUCTURAL FEATURES OF THE VAISHNAV SONGS OF PARGANA BANGALI, PhD Thesis, Department of Linguistics, University of Chicago, 1975.
12. KALYANI, English translation of the KALYĀNĪ (Hindi Novel by Jainendra Kumar), Department of South Asian Studies, University of Minnesota, Minneapolis, 1976(with Paul Staneslow and Mark Johnson).
13. Some Formal Features of Mundari Traditional Poetry in Philip Jenner, Lawrence Thompson and Stanly Starosta (Eds) AUSTRO ASIATIC STUDIES, University of Hawaii Press, 1976
14. HOLY MAN FROM JAMANIA, English Translation of the Hindi novel JAMANIA KĀ BĀBĀ by Nagarjuna, Writers Workshop, Calcutta, 1977 (with Paul Staneslow).
15. Word Deformation in Mundari Song Texts in Peter Ponette (Ed) MUNDA WORLD, Catholic Press, Ranchi 1978(with Norman Zide).
16. KUCHH NAE NĀGPURĪ GĪT (Songs in Nagpuri), Nagpuri Sahitya Parishad, Ranchi, 1978.
17. MUNDĀRĪ VYĀKARAN (Mundari Grammar), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1979.
18. DHRUWA SWAMINI, English Translation of Hindi Play by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis. Also in JOURNAL OF SOUTH ASIAN LITERATURE 14, Michigan State University Press, 1979 (with Paul Staneslow).
19. Tribal development in JHARKHAND in P. Das Sharma(Eds)PASSING SCENES IN CHOTANAGPUR, Maitree Publications, Ranchi, 1980.
20. EEA NAWA KAANIKO (Seven New Stories), Mundari Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
21. TITLI, English Translation of the Hindi Novel by Jaishankar Prasad, Department of South Asia Studies, University of Minnesota, Minneapolis,1980(with Paul Staneslow).
22. NADĪ AUR USKE SAMBANDHĪ TATHĀ ANYA NAGĪT, Jharkhand Sahitya Parishad, Ranchi, 1980.
23. THE SUN CHARIOTEER, English Translation of Hindi long poem RASHMIRATHI by Ramdhari Singh Dinkar, Department of South Asia Studies, University on Minnesota,1981 (with Paul Staneslow and David Nelson)

24. LANGUAGE OF POETRY, Classical Publication, Delhi, 1981.
25. BIRSA MUNDA, Hindi Translation of the BENGALI BIRSA MUNDA by Mahasweta Devi, Ekta Prakashan,Chaibasa,1981.Second edition, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2000.
26. WAPASI, PUNARMILAN AUR ANYA NAGĪT, Jharkhand Sahitya Parishad, 1985.
27. ALL JHARKHAND STUDENTS UNION KA SAMVIDHĀN, Ranchi, AJSU, Ranchi, 1986(with S. Basu Malik, Suraj Singh Besra and Deosharan Bhagat).
28. MEMORANDUM OF JHARKHAND COORDINATION COMMITTEE, JCC, Ranchi, 1987 (with B.P.Keshari, Santosh Rana, S. Basu Malik, and Suraj Singh Besra).
29. JHARKHAND VĀRTĀ, Position Paper for talks between the JCC and the Central Government, JCC, Ranchi, 1989 (with B.P.Keshri).
30. Tribal Identity: The Crisis and the Way Out in Karuna.M.Braganza and S.Peeradina(Eds) *CULTURAL FORCES SHAPIG INDIA*, (Macmillan) Bangalore, 1989. Also in RELIGION AND SOCIETY 36, Bangalore, 1989.
31. Jharkhand Movement, Retrospect and Prospect in JOURNAL OF SOCIAL CHANGE, Council for Social Development, Delhi, 1990.
32. JHARKHAND PEOPLES PARTY KA SAMVIDHĀN, JPP Office, Ranchi, 1990 (with Suraj Singh Besra and Devsharan Bhagat).
33. Dispossession and Exploitation of Tribal Peoples Through Communication Manipulation, with Special reference to Jharkhand in RELIGION AND SOCIETY 38,1991
34. Recent Development in Jharkhand Movement in INDIA INTERNATIONAL QUTERLY, Indian International Centre, 1992.
35. Introduction to Indigenous and Tribal Solidarity, ICITP, Delhi, 1997.
36. BHURIA COMMITTEE REPORT AUR JHARKHAND KI SHETRA ME USKĀ KĀRYĀNVAYAN, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 1997.
37. Abstract on Socio-Cultural Rights: Language, Education and Cultural Identity in B.K. Roy Burman and B.G. Verghese (Eds) ASPIRING TO BE, Delhi, Konark Publication, 1995.
38. An Insiders View of the Struggle for Jharkhand in JAI JHARKHAND, Coimbatore, Sarini, 1999.
39. Adivasi Identity in RISING FACISM, Delhi, Update Collection, 2000.
40. ADI DHARAM, Religious Beliefs of Adivasi of India, Sarini, Coimbatore, 2000. Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001. Bangali, Sail Rakab Puthi Centre, 2002.
41. ADIVASI ASTITVA AUR JHARKHANDI ASMITA KE SAWĀL, Prakashan Sansthan, Delhi, 2001.
42. ADANDI BONGA (WIVĀH MANTRA), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001 (with Ratan Singh Manki).
43. JI-TONOL (MAN BANDHAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.
44. JI-RANAṚA (MAN BICHHURAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2001.
45. ENEON (JĀGARAN), Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.
46. BA (H) BONGA (SARHUL MANTRA), Mundari- Hindi Version, Jharkhand Prakashan, Ranchi, 2002.
47. REPORT OF THE WORKING GROUP ON EMPOWERMENT OF THE SCHEDULE TRIBES DURING THE TENTH FIVE YEAR PLAN, Planning Commission, Government of India, Delhi, 2002.
48. GONOE? PAROMEN BONGA (SHRĀDDHA MANTRA), Mundari Hindi Version, Sail Rakab Puthi Centre, Calcutta, 2003(with Ratan Singh Manki).
49. JHARKHAND MOVEMENT, Indian Social Institute, Delhi, 2000 (with S. Basu Malik).
50. GLOBALISATION AND THE CHALLENGES OF TRIBAL DEVELOPMENT (Dr. Durgabai Deshmukh Memorial Lecture), Council for Social Development, New Delhi, 2005.
51. ADI DHARAM, BHĀRATIYA ADIVĀSIYAON KI DHĀRMIK ASTHĀYEN, New Delhi (Rajkamal Prakashan), 2009.
52. SOSOBONGA (BHELWA PŪJAN) PUNARNAVISRIT, New Delhi (Rajkamal Prakashan) in press.

WORKS IN PROGRESS

1. TUKUI? LUTUR BONGA (KARNA BEDHI MANTRA), Mundari-Hindi Version.
2. BURU SENGEL (FOREST FIRE), Mundari Novel.
3. RECONSTRUCTING JHARKHAND: A DEVELOPMENT BLUE PRINT.
4. INDIA'S CONTRIBUTION TO THE UN WORKING GROUP ON INDIGENOUS POPULATIONS 1990-2000.(with Jebra Ram Muchahari)
5. MUNDARI VYAKARAN AUR SABDKOSH.
6. PANCHPARGANA KE PREM GEET.
7. MUNDARI CHHAND.

8. MUNDARI LOKGEET KAVITAYEN.
9. JHARKHANDI JAGARAN GEET.
10. STUDIES IN TRIBAL LANGUAGES AND CULTURES OF INDIA, Professor Norman Zide Commemoration Volume.

उल्लेखनीय सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ

आदिवासी सांस्कृतिक पहचान प्रतिबिंबन-

- रांची विश्वविद्यालयी दिनों में ही वृहत्तर झारखण्ड क्षेत्रीय आदिवासी सरहुल महोत्सव के रूप में रांची में एक विशाल शोभायात्रा की परम्परा प्रारंभ करने में प्रमुख भूमिका। इस महोत्सव ने कालक्रम में पिछले 50 वर्षों में एक क्षेत्रीय विकेन्द्रित रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप चैत्र का पूरा महीना ही महोत्सवमय हो जाता है।
- विदेश (अमेरिका-यूरोप) प्रवास के 18 वर्षों 1963-81 के दौरान भाषाविज्ञान और भारत विद्या के अध्ययन-अध्यापन के क्रम में साउथ एशिया फोक पर्फोमर्स के 25 सदस्यीय दल के नेतृत्वकारी टीम सदस्य के रूप में मध्य अमेरिका के प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय नृत्यसंगीत आयोजनों में सफल सहभागिता।
- स्वदेश वापस आने के बाद रांची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के साथ भारत में आदिवासियों के बीच सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रारंभ। साथ ही पूर्व एशिया (ताइपेई, जापान) एवं दक्षिण-पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, फिलीपींस) में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजनों में झारखण्डी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुति।
- झारखण्ड विषयक समिति, भारत सरकार (1989-2000) में सक्रिय भागीदारी एवं उल्लेखनीय भूमिका, जिसके फलस्वरूप झारखण्ड राज्य का गठन।
- विश्व सामाजिक मंच (World Social Forum) मुंबई (2004) एवं दिल्ली (2007) सत्रों में सर्वोत्तम भागीदारी।
- डोम्बारी पहाड़ (जिला-खूंटी, झारखण्ड) पर जनसहयोग एवं सरकारी विभागों के समन्वय से आदिवासी महानायक, बिरसा मुण्डा की विशालकाय (18 फीट) प्रतिमा एवं 80 फीट का शहीद स्तंभ खड़ा करने में अग्रणी भूमिका निर्वहन।
- झारखण्ड सांस्कृतिक क्षेत्र में यहां की लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए अखरों ग्राम सांस्कृतिक केन्द्र के पुनर्जागरण एवं विस्तार-प्रसार को एक अभियान का रूप देने में उल्लेखनीय भूमिका निर्वहन। इस चेष्टा की मान्यता स्वरूप 2008 में संगीत-नाटक अकादमी द्वारा भारत के राष्ट्रपति के करकमलों से पुरस्कृत।
- सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से मिलकर जनविकास के अनेक कार्यक्रमों में सफल सहभागिता, विशेषकर वन विस्तार एवं संरक्षण के क्षेत्र में।
- राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी जनहित अधिनियमों के प्रारूप निर्माण कार्य में सक्रिय भूमिका, विशेषकर ग्राम स्वशासन (PESA) आदिवासी नीति एवं वन नीति-नियम निर्माण में।
- प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक सम्पोषण (Symbiotic) संबंध को बनाए रखने की चेष्टा के एक आस्थागत अभियान का रूप आदिधर्म को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना को समर्पित एवं देश की आदिवासी आबादी के लिए 'आदिधर्म' की प्रस्तावना।
- देश के आदिवासी क्षेत्रों में फैलते हुए उग्रवाद पर चिंतित एवं इसके पीछे की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की चेष्टा में संलग्न।

Travels: North America, Europe, Asia-Pacific

Contact: Sarnatoli- Hatma, Behind Ranchi College, Ranchi-834008, Jharkhand.

उल्लेखनीय सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियां

आदिवासी सांस्कृतिक पहचान प्रतिबिंबन–

- राँची विश्वविद्यालयी दिनों में ही वृहत्तर झारखण्ड क्षेत्रीय आदिवासी सरहुल महोत्सव के रूप में राँची में एक विशाल शोभायात्रा की परम्परा प्रारंभ करने में प्रमुख भूमिका। इस महोत्सव ने कालक्रम में पिछले 50 वर्षों में एक क्षेत्रीय विकेन्द्रिय रूप ले लिया है जिसके फलस्वरूप चैत्र का पूरा महीना ही महोत्सवमय हो जाता है।
- विदेश (अमेरिका–यूरोप) प्रवास के 18 वर्षों (1963–81) के दौरान भाषाविज्ञान और भारत विद्या के अध्ययन–अध्यापन के क्रम में साउथ एशिया फोक पर्फोमर्स के 25 सदस्यीय दल के नेतृत्वकारी टीम सदस्य के रूप में मध्यअमेरिका प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय नृत्यसंगीत आयोजनों में सफल सहभागिता।
- स्वदेश वापस आने के बाद राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के साथ आदिवासी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रारंभ। साथ ही पूर्व एशिया (ताइपेई, जापान) एवं दखिण–पूर्व एशिया (इण्डोनेशिया, फिलीपीन) में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजनों में झारखण्डी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुति।
- झारखण्ड विषयक समिति, भारत सरकार (1989–2000) में सक्रिय सदस्यता एवं उल्लेखनीय भूमिका, जिसके फलस्वरूप झारखण्ड राज्य गठन।
- विश्व सामाजिक मंच (World Social Forum) मुंबई (2004) एवं दिल्ली (2007) सत्रों में सर्वोत्तम भागीदारी।
- डोम्बारी पहाड़ (जिला–खूंटी, झारखण्ड) पर जनसहयोग एवं सरकारी विभागों के समन्वय से आदिवासी महानायक, बिरसा मुण्डा की विशालकाय (18′) प्रतिमा एवं, 80′ शहीद स्तंभ खड़ा करने में अग्रणी भूमिका निर्वहन।
- झारखण्ड सांस्कृतिक क्षेत्र में यहां की लोक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए अखरा (ग्राम सांस्कृतिक केन्द्र) के पुनर्जागरण एवं विस्तार–प्रसार को एक अभियान का रूप देने में उल्लेखनीय भूमिका निर्वहन। इस चेष्टा की मान्यता स्वरूप 2008 में संगीत–नाटक अकादमी द्वारा भारत के राष्ट्रपति के करकमलों से पुरस्कृत।
- सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं से मिलकर जनविकास के अनेक कार्यक्रमों में सफल सहभागिता, विशेषकर वन विस्तार एवं संरक्षण के क्षेत्र में।
- राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी जनहित अधिनियमों के प्रारूप निर्माण कार्य में सक्रिय भूमिका, विशेषकर ग्राम स्वशासन (PESA) आदिवासी नीति एवं वन नीति–नियम निर्माण में।
- प्रकृति और मनुष्य के पारम्परिक सम्पोषण (Symbiotic) संबंध को बनाए रखने की चेष्टा के एक आस्थागत अभियान का रूप आदिधर्म को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना को समर्पित एवं देश की आदिवासी आबादी के लिए 'आदिधर्म' की प्रस्तावना।
- देश के आदिवासी क्षेत्रों में फैलते हुए उग्रवाद पर चिंतित एवं इसके पीछे की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने की चेष्टा में संलग्न।

Travels : North America, Europe, Asia-Pacific
Contact : Sarnatoil-Hatma, Behind Ranchi College, Ranchi-834008, Jharkhand.
Email : rdmunda@yahoo.co.uk ● ***Cell Phone:*** 9431938180 ***Home:*** 0651-2233090